2. पत्रकारिता : सैद्धान्तिक स्वरूप एवं विकास

2.1 पत्रकारिता क्या है ?

वर्तमान काल में पत्रकारिता आधुनिक युगबोध, राष्ट्रीय चेतना, बौद्धिक जागरूकता एवं व्यापक जन-संवेदना को संप्रेषित करने का सर्वसुलभ उन्नत जन-माध्यम है। यह लोक-मानस की सामुदायिक सहभागिता की वह जीवंत-विधा है जिसमें जनता की आत्मा के स्वर, उसके दुःख-सुख, जय-पराजय, आशा-आकांक्षा तथा सामयिक एवं सनातन सत्य मुखर हो उठते हैं।

2.1.1. पत्रकारिता : परंपरागत एवं आधुनिक परिदृश्य

पराधीन भारत में 'पत्रकारिता' शब्द के लिए अन्य पर्याय 'पत्रकारी', 'पत्रकला', 'संवाद-पत्रकला', 'वृत्तविवेचन', 'समाचारपत्र-सम्पादन' आदि अधिक प्रचलित थे[1], किंतु वर्तमान हिन्दी भाषा और साहित्य में 'पत्रकारिता' शब्द रूढ़ हो गया है और इस शब्द का प्रयोग अंग्रेजी शब्द 'जर्नलिज्म' (Journalism) के पर्याय के रूप में होता है। मूल रूप में 'जर्नलिज्म' शब्द की व्युत्पत्ति फ्रांसीसी भाषा के 'जर' (Jour) और जर्नल (Journal) शब्द से हुई है जिसका शाब्दिक अर्थ इस भाषा में क्रमशः 'एक दिन' और 'समाचार पत्र' है।[2] संस्कृत भाषा के 'पत्र' शब्द में 'कृ' (करना) धातु णिनि + तल् + टाप् प्रयत्नों के योग से 'पत्रकारिता' शब्द बना है[3] जिसका पारंपरिक अर्थ 'पत्र-पत्रिकाओं के लिए समाचार, लेख आदि एकत्र करने तथा संपादित करने, प्रकाशन आदेश आदि देने का कार्य है।"[4]

किन्तु पत्रकारिता के पारंपरिक अर्थ और क्षेत्र में क्रमिक विस्तार हो गया है। प्रो० एडविन एमरी ने इसके आधुनिक विस्तृत अर्थ और क्षेत्र की ओर इंगित करते हुए कहा है, "परम्परागत रूप में पत्रकारिता का कार्य समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं में समाचारों को एकत्रित करके लिखना, सम्पादन करके प्रकाशित करना या समाचारों पर

1. विशाल भारत मई, 1932, पृ० 583
2. पुरनल्स न्यू इंगलिश एनसाइक्लोपीडिया (खंड 7), पृ० 3445
3. मानक हिन्दी कोश (तीसरा खंड), पृ० 380
4. 'वैज्ञानिक परिभाषा कोश', पृ० 117

टिप्पणियाँ देना समझा गया है किन्तु पत्रकारिता का क्षेत्र उपर्युक्त कथन से बढ़ गया है। उसमें सामुदायिक या आकर्षक लोक-सामग्री का विविध संचार माध्यमों द्वारा प्रसारण भी सम्मिलित है जिसमें मुख्य रूप से रेडियो और दूरदर्शन आते हैं। इन्हें सामान्यतया इलेक्ट्रोनिक पत्रकारिता कहा गया है।"[1]

वर्तमान पत्रकारिता के अंतर्गत तत्कालीन समाचारों-विचारों का लिपिबद्ध मुद्रित प्रकाशन अर्थात् पत्र-पत्रिकाएँ ही सम्मिलित नहीं हैं, वरन् रेडियो, दूरदर्शन आदि अन्य जनसंचार माध्यमों द्वारा भव्य प्रस्तुति एवं आकर्षक मौखिक प्रसारण भी समाहित हैं। पत्रकारिता के विषय एवं स्वरूप जीवन के सर्वांग पक्षों से सम्बद्ध हो गए हैं। "पत्रकारिता शायद सबसे अधिक रोमांचक तथा जोखिमपूर्ण व्यवसायों में से एक है जिसमें पत्रकारों को देश के दैनिक जीवन के कार्यकलापों का ही नहीं, वरन् वायुयानों की उड़ानों, युद्ध और खोज जैसे विषयों के संवाद भी देने आवश्यक होते हैं।"[2]

इस आधुनिक शक्तिशाली सामाजिक जनसंस्थान के अंतर्गत अनेक विभाग आते हैं—

1. समाचारपत्र एवं पत्रिकाएँ
2. रेडियो
3. दूरदर्शन
4. चलचित्र
5. विज्ञापन
6. जनसंपर्क[3]
7. पत्राचार

प्रसिद्ध सम्पादक एवं पत्रकार श्री रोलैंड ई० वूल्सले ने आधुनिक भारतीय पत्र-

---

1. "Traditionally journalism is regarded as the collecting, writing, editing and publishing of news or comment upon news in newspapers and periodicals. The scope of journalism has however expanded to include the presentation of material of current interest or wide, popular appeal in a variety of media notably radio and television which are commonly referred to as electronic journalism"—'Lexicon Universal Encyclopedia, Volume-11 (1-J) page 453-454.
2. Journalism is perhaps one of the most exciting and hazardous of the profession for reporters must cover not only the every day life of the country but subjects like aviation, war and exploration (H. M. Stenleys) 'Chambers Encyclopedia', Volume 8 (J-Mala) page 142.
3. प्रवीण दीक्षित : जनमाध्यम और पत्रकारिता (भाग 1) आमुख चार्ट, पृ० 1

कारिता की अवधारणा को इस प्रकार स्पष्ट किया है—"प्रायः हमेशा ही पत्रकारिता का अर्थ मुख्य रूप से समाचारपत्रों सम्बन्धी काम से लिया जाता रहा है। किन्तु आज के भारत में पत्रकारिता का सम्बन्ध व्यापारिक पत्रिकाओं, समाचार पत्रों के लिए फोटो लेने की कला, रेडियो के समाचार, जनसंवेदन सम्बन्धी कार्यों (पब्लिसिटी) सामान्य पत्रिकाओं के कार्यों तथा अन्य ऐसी कितनी बातों से है जिनका सम्बन्ध समाचार-पत्रों से नहीं है।"[1]

संक्षेपतः विश्व के अन्य देशों के समान भारत में भी पत्रकारिता का विस्तीर्ण क्षेत्र, विकसित तकनीकी, विविध विषयों की संयोजना, सचित्र एवं साज-सज्जायुक्त प्रसारित एवं प्रकाशित होने वाली मौलिक-पाठ्य-दृश्य सामग्री इसका वर्तमान परिदृश्य है। आज यह चाक्षुष-श्रव्य-पाठ्य कला है जो विगत प्रारम्भिक उन्नीसवीं शती की भारतीय पत्रकारिता से नितान्त भिन्न है।

2.1.2. पत्रकारिता : परिभाषा एवं स्वरूप

पत्रकार रा० र० खाडिलकर ने आधुनिक पत्रकारिता को परिभाषित करते हुए कहा है—"ज्ञान और विचार, शब्दों तथा चित्रों के रूप में दूसरे तक पहुँचाना पत्रकला है।"[2]

डॉ० रामचन्द्र तिवारी ने भी लगभग इसी प्रकार समान विचार अभिव्यक्त किए हैं।[3] हरबर्ट ब्रूकर ने पत्रकारिता को व्याख्यायित करते हुए कहा—"यह वह माध्यम है, जिसके द्वारा हम अपने मस्तिष्क में उस विश्व के बारे में समस्त सूचनाएँ संकलित करते हैं जिन्हें हम स्वतः कभी नहीं जान सकते।"[4]

इन परिभाषाओं में इसके मूल तत्त्व जनसम्पर्क एवं जनसंप्रेषण की ओर संकेत किया गया है। वस्तुतः पत्रकारिता नित्य परिवर्तित होते सामयिक जनजीवन, भौतिक घटनाचक्र, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय कार्यकलापों का संकलन एवं प्रस्तुतिकरण मात्र नहीं है, यह कला व्यापक जनसंवेदना, पारदर्शी मानवीय अनुभूतियों एवं अमूर्त भावनाओं को संप्रेषित करने का विश्वसनीय लोकप्रिय जनमाध्यम भी है। पत्रकारिता की आत्मा समाचारों और विचारों में व्याप्त मानवीय सहजानुभूति एवं अमूर्त संवेदनशीलता है जिसकी उष्णता का अनुभव किसी घटना के समाचारों और विचारों को पढ़-सुनकर सहज ही होने लगता है। उदाहरणार्थ किसी रेल या विमान दुर्घटना या भूकंप का समाचार निर्दोष मृत एवं घायलों के प्रति संवेदना जागृत कर देता है। दहेज के दावानल में भस्मीभूत होती अबलाओं के समाचार लोकमानस में जलती नारी का काल्पनिक या वास्तविक चित्र

1. सं० रोलैंड ई० वूल्सले, 'भारतीय पत्रकार कला', प्राक्कथन, पृ० 4
2. रा० र० खाडिलकर, 'आधुनिक पत्रकार कला', पृ० 2
3. "ज्ञान तथा विचारों को समीक्षात्मक टिप्पणियों एवं चित्रों सहित विशाल जनमानस तक पहुँचाना ही पत्रकारिता है।"—डॉ० रामचन्द्र तिवारी, 'पत्रिका सम्पादन कला', पृ० 58
4. हर्बर्ट ब्रूकर, 'फ्रीडम् ऑफ इनफर्मेशन', पृ० 4

उभार कर उस सामाजिक कुरीति के प्रति आक्रोश एवं घृणा का संचार करते हैं, मानव जाति को जागृत करके जनमत का निर्माण करते हैं। ये पत्र आधुनिक समाज के सांस्कृतिक-सामाजिक संगठन की नवीन संकल्पना भी प्रस्तुत करते हैं।[1] साररूप में पत्रकारिता अन-देखी सामयिक घटनाओं एवं इन्द्रियगोचर समाचारों का बिना लाग-लपेट के निष्पक्ष विवरण ही नहीं, वरन् समाचारों एव विचारों में व्याप्त मानवीय अनुभूतियों का संवेदन-शील सम्मूर्तन भी है। आज पत्रकारिता लोकमानस में किसी जनमान्यता या जनाकांक्षा का निर्माण कर जनजागरण के लिए रूप एवं वाणी देती हैं। वह किसी हृदय विदारक त्रासदी या अन्याय आदि से सम्बन्धित तथ्यों को बेनकाब कर जनमानस को सचेत करती है।

पत्रकारिता राष्ट्रीय और मानवीय मूल्यों से सम्बद्ध होती है। पत्रकार अर्जुन तिवारी का कथन है, "राष्ट्रीय एवं मानवीय मूल्यों से संदर्भित सत्कार्य ही पत्रकारिता है जिससे देशवासियों की नस-नस में स्वतन्त्रता, समानता और विश्वबंधुत्व की भावना का संचार होता है।[2]

प्रारम्भ में पत्रकारिता को अधिक-से-अधिक जल्दबाजी में रचित इतिहास या साहित्य समझा जाता था पर अब इस लोकशक्ति सम्पन्न, गंभीर उत्तरदायित्वपूर्ण सामा-जिक संस्थान को लोकतंत्र में 'फोर्थएस्टेट',[3] 'पावर बिहाइण्ड दी थ्रोन' की संज्ञा दी जाती है। भारतीय पत्रकारिता का इतिहास ऐसे सशक्त राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं के अद्‌भुत साहसिक दृष्टान्तों से भरा हुआ है जिन्होंने ब्रिटिश शक्ति को अपने तेजस् और दीप्ति से निस्तेज कर दिया था।

पत्रकारिता अल्प या निश्चित कालावधि में समाचारों, भावों एवं विचारों को अभिधापरक कथन और सर्जनात्मक विधाओं के माध्यम से व्यापक स्तर पर वृह्‌त्तम संप्रेषण करने की कला है। इसके द्वारा विश्व के समग्र वाङ्‌मय, सामायिक लोक-जीवन के परिवर्तनचक्र, सभ्यता-संस्कृति के विविध आयामों तथा ज्ञान-विज्ञानयुक्त विचार-शृंखला को समझने और महसूस करने की गहरी निर्लिप्त दृष्टि एवं वैज्ञानिक तर्क-प्रज्ञा प्राप्त होती है। फलतः पत्रकारिता अधिकतम पाठकों को कम कीमत पर नवचिंतन तथा नव-वैचारिक-आयाम देकर बौद्धिक युग का सूत्रपात करती है।[4]

आधुनिक पत्रकारिता रचनात्मक एवं बौद्धिक सृजन से अधिक एक आर्थिक व्यव-साय तथा औद्योगिक प्रतिष्ठान हो गई है जो लाभ और धन-प्राप्ति को आकांक्षा से प्रेरित है। आधुनिक पत्र-व्यवसाय पूंजीपतियों के हाथ की कठपुतली बन चुका है[5] और "पूंजी-

---

1. लिपमैन, वाल्टर, 'पब्लिक ओपिनियन', पृ० 365
2. डॉ० अर्जुन तिवारी, 'स्वतन्त्रता आंदोलन और हिन्दी पत्रकारिता' (प्राक्कथन), पृ० 13
3. कमलापति त्रिपाठी, 'पत्र और पत्रकार', पृ० 6
4. प्रो० एडविन एमरी, 'द प्रेस एंड अमेरिका', पृ० 7
5. जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी, 'पत्रकारिता के परिप्रेक्ष्य', पृ० 159

पतियों का पत्र-संचालन कोरा व्यवसाय है, उसमें आदर्शवाद की गुंजाइश नहीं है।"[1] यद्यपि वर्तमान पत्रकारिता 'मिशन' नहीं रह गई तथापि इस सर्वाधिक गौरवपूर्ण पेशे को अन्य साधारण व्यवसायों चिकित्सा, कानून, इंजीनियरिंग आदि के समकक्ष नहीं रखा जा सकता।[2] पत्रकार केवल वेतनभोगी श्रमजीवी नहीं, वह उससे बहुत अधिक समाज के हितों का प्रहरी, जनता का शिक्षक, पक्षधर, लोकमत तथा लोक जागरण का निर्माता है! वह मूक, दुर्बल प्रजा पर हुए अत्याचारों के समक्ष योद्धा है, "पत्रकार की सबसे बड़ी चिंता यह होती है कि अधिकतम व्यक्तियों का अधिकतम हित कैसे हो। वह गरीब और पद दलित का मित्र होता है।"[3]

निष्कर्षत: पत्रकारिता एक ओर जन-जीवन या राष्ट्र को समर्पित निस्वार्थ जन-सेवा एवं बौद्धिक साधना है तो दूसरी ओर आर्थिक लाभ प्राप्त करने का उद्योग भी है।[4] लंदन टाइम्स के भूतपूर्व संपादक एच० विखेम का कथन सच ही है, "पत्रकारिता कला है, वृत्ति है और जनसेवा है।"[5] "पत्रकार लोक-सेवक, लोक-प्रतिनिधि, लोकनायक और लोक-गुरु की चतुर्विध पदवी धारण करता है।"[6]

2.2.3. पत्रकारिता की मूल प्रकृति

1. प्रत्येक वस्तु, विचार एवं भाव को जान लेने की उत्कट पिपासा या जिज्ञासा वृत्ति।

2. सृष्टि के कार्यकलापों एवं घटना-चक्र को ज्ञान-विज्ञान या तर्क-विवेक द्वारा वस्तुनिष्ठ दृष्टि से विश्लेषित करने की प्रवृत्ति।

3. जन-जीवन से स्पंदित, उद्वेलित होकर संवेदनशील जनानुभूति की त्वरित सहज सार्थक, अभिव्यक्ति।

वस्तुत: पत्रकारिता वह माध्यम है जिसके द्वारा मानव की मूल जिज्ञासा क्यों, क्या, कैसे, कब, कहाँ आदि प्रश्नों का शमन होता है। पत्रकारिता में सत्यं, शिवं, सुंदर का भाव

---

1. इन्द्रवाचस्पति, 'पत्रकारिता के अनुभव', पृ० 75
2. वाल्टर लिपमैन, 'पब्लिक ओपिनियन', पृ० 323
3. जे० बी० मेकी, 'माडर्न जर्नलिज्म'
4. "समाचार पत्र केवल आर्थिक उद्यम नहीं, वरन् एक बौद्धिक उद्यम भी है। पत्रकार का दर्जा कुछ अस्पष्ट-सा है क्योंकि वह एक ओर व्यापारिक संस्थान के लिए कार्य करता है, दूसरी ओर वह एक साहित्यिक परम्परा का ट्रस्टी होता है और बौद्धिक स्वतन्त्रता एवं अपने पाठकों को जानकारी देने के लिए समर्पित होता है"—प्रो० जेक्स लियोट, स्ट्रासवर्ग इंटर नेशनल सेंटर फॉर हायर स्टडीज, एम० चलपतिराव, 'समाचार पत्र', पृ० 206
5. रा० र० खाडिलकर, 'आधुनिक पत्रकार कला', पृ० 61
6. श्री काका कालेलकर, 'विशाल भारत', मई 1932, पृ० 581

निहित है। पत्रकार सत्य का अन्वेषक है। वह सत्यानुभूति को आकर्षक साहसपूर्ण अभिव्यक्ति देकर मानव कल्याण या शिवतत्व के लिए संप्रेषित करता है।

4. विविध रूप—आधुनिक पत्रकारिता में विशिष्टीकरण और विषय विशेषज्ञता की प्रवृत्ति घर कर गई है। वर्तमान पत्र-पत्रिकाएँ समाज के प्रत्येक वर्ग, व्यवसाय, धर्म, संप्रदाय तथा सर्जनात्मक एवं ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न शाखाओं के लिए पृथक्-पृथक् निकलती हैं। उदाहरणस्वरूप साहित्यिक पत्रकारिता में कहानी, नाटक, कविता आदि की विशिष्ट पत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं।

प्रकाशन अवधि के आधार पर पत्र-पत्रिकाओं का स्वरूप निम्नलिखित हो सकता है —दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, द्विमासिक, त्रैमासिक, चतुर्मासिक, अर्द्ध-वार्षिक, वार्षिक तथा अनियतकालीन इत्यादि।[1]

'एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका' में समाचार पत्र और पत्रिका का अन्तर इस प्रकार स्पष्ट किया है, "समाचार पत्र एक अजिल्द धारावाही प्रकाशन है जो नियमित समय के अन्तर से प्रकाशित होता है जिसमें समाचारों को प्रमुखता दी जाती है। अधिकांश समाचार पत्र दैनिक या साप्ताहिक होते हैं, कुछ अर्द्ध साप्ताहिक होते हैं। पाक्षिक और मासिक समाचार पत्रों के उदाहरण शायद ही कभी मिले हों। समाचार पत्र और पत्रिका का अन्तर भी रोचक है, विशेष रूप से साप्ताहिक प्रकाशनों के बीच। यदि प्रकाशन सजिल्द है तो उसे पत्रिका कहा जाएगा। समाचार पत्रों के लिए पृष्ठ संख्या और आकार का निर्धारण नहीं किया गया।"[2]

5. पत्रकारिता के आदर्श मानदंड—पत्रकारिता के चार आधारभूत सिद्धान्त माने गए हैं—1. सत्य का अनवरत अन्वेषण, 2. काल की तीव्र गति को पकड़ने का प्रयास, 3. मानवता की सार्थक सेवा, 4. अडिग स्वातन्त्र्य-आकांक्षा।[3]

सन् 1923 ई० में 'अमेरिकी समाचार-पत्र संपादक सोसाइटी' द्वारा स्वीकृत मानदंडों को विश्व के अधिकांश राष्ट्र न्यूनाधिक मान्यता देते हैं, वे संक्षेप में इस प्रकार हैं[4]—

1. उत्तरदायित्व (Responsibility)—समाचार-पत्रों आदि के कार्य जनकल्याण की भावना से प्रेरित होकर किये जाने चाहिए, अपनी स्वार्थ-सिद्धि या असामाजिक कार्यों से प्रेरित होकर नहीं।

2. प्रेस की स्वतन्त्रता (Freedom of the Press)—मानव के महत्त्वपूर्ण अधिकार प्रेस की स्वतन्त्रता की रक्षा होनी ही चाहिए। पत्र-पत्रिकाओं को निर्भय होकर (कानून द्वारा अनुमोदित) विषयों का विवेचन करना चाहिए।

---

1. सं० राधेश्याम शर्मा, 'जन संचार', पृ० 79
2. Encyclopaedia Britannica, Volume 16, page 334.
3. जॉन होहानवर्ग, द प्रोफेशनल जर्नलिज्म, पृ० 3
4. बी० एन० आहूजा, थ्योरी एंड प्रैक्टिस ऑफ जर्नलिज्म 1987 (द्वितीय संस्करण), पृ० 4-5

3. **निर्भीकता** (Independance)—पत्रों को जनहित के लिए निष्पक्ष एवं स्वतन्त्र होकर निर्भीक संपादकीय टिप्पणियां लिखनी चाहिएं।

4. **ईमानदारी, सत्यता और सटीकता** (Sincerity, truthfullness and Accuracy)—पत्रकारिता के व्यवसाय में संलग्न व्यक्तियों एवं पत्रकारों को पाठकों के प्रति ईमानदार होना चाहिए। कोई सामग्री सत्यता की जाँच-परख करके ही प्रकाशित होनी चाहिए।

5. **नैतिकता** (Fairplay)—पत्र-पत्रिकाओं में किसी व्यक्ति के चरित्र और यश पर आक्षेप करने वाली ऐसी सामग्री प्रकाशित नहीं की जानी चाहिए जिसमें उन आक्षेपों का उत्तर देने का सम्बन्धित व्यक्ति को अवसर न मिल सके।

6. **निष्पक्षता** (Impartiality)—समाचार प्रकाशन में किसी ओर झुकाव नहीं होना चाहिए। विचारपूर्ण अग्र लेखों और टिप्पणियों की बात पृथक् है।

7. **शिष्टता** (Decency)—लोक रुचि के आदर्शों को ध्यान में रखकर ही पत्रकारों को कोई सामग्री छापनी चाहिए।

कह सकते हैं कि जिस प्रकार कवियों की श्रेष्ठता का निकष गद्य है, गद्य की उत्कृष्टता का प्रतिमान 'निबंध' है उसी प्रकार पत्रकारिता का निकष 'जन-हित' है। एक श्रेष्ठ सफल पत्र के रहस्य की कुंजी है—जागरूकता, साहसिक तत्परता और यथार्थता।[1]

2.2.6. पत्रकारिता के उद्देश्य

पत्रकारिता के मूल उद्देश्य क्या हों? 'जनहित' या 'अधिक-से-अधिक लाभांश प्राप्ति'। पत्र-पत्रिका के मालिक अथवा संचालक की दृष्टि में अधिकांशतः आर्थिक लक्ष्य सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होता है,[2] जबकि पाठक समुदाय इनको ज्ञान-क्षितिज के विस्तार और जनहित का प्रतिनिधित्व करने वाली सामग्री की उम्मीद से खरीदता है। उत्तम कोटि की पत्र-पत्रिकाएँ इन दोनों मूल उद्देश्यों को दृष्टि में रखकर पत्र-नीति का निर्माण करती हैं।

पत्रकारिता के उद्देश्य विभिन्न परिवर्तनों के साथ युगानुरूप बदलते रहते हैं। गांधी जी ने कहा था "पत्रकारिता एक सेवा है?" यदि इसे गांधी जी से भी पूर्व 19वीं शताब्दी की प्रारम्भिक हिन्दी पत्रकारिता का सिंहावलोकन किया जाय तो यह तथ्य निर्विवाद रूप से सत्य है कि उस काल की अधिकांश पत्र-पत्रिकाएँ यथा 'कविवचन सुधा', 'हरिश्चन्द्र मैगजीन', 'हिन्दी प्रदीप', 'ब्राह्मण', 'भारत मित्र', 'सारसुधानिधि', 'समय-विनोद', 'उचितवक्ता', 'भारतेन्दु' आदि किसी व्यावसायिक दृष्टिकोण से नहीं, वरन् विशुद्ध जन-सेवा, जन-जागृति एवं जन-समर्पण की भावना से निकाली गई थीं।"[3] उन दिनों पत्रकारों के लिए कोई पारिश्रमिक या पुरस्कार की भी व्यवस्था नहीं थी। 'महारथी'

---

1. 'Journalism', Lectures by Lord Riddell, p. 53
2. डॉ० सुकमाल जैन, 'भारतीय समाचार पत्रों का संगठन एवं प्रबंध', पृ० 11
3. बच्चनसिंह : 'हिन्दी पत्रकारिता के नये प्रतिमान', पृ० 1

मासिक के संपादक श्री रामचन्द्र महारथी के शब्दों में, "उन दिनों पत्रकारिता एक व्रत होता था वृत्ति नहीं ।"[1] अधिकतर पत्र संचालक अनवरत अपार हानि सहन करके भी देशहित के लिए समर्पित भाव से पत्र चलाते ही जाते थे। उस पराधीन भारत में स्वतंत्रता-संघर्ष के लिए जनमानस को चैतन्य एवं उद्बुद्ध कर दिशा देना ही उनका लक्ष्य था। ये पत्र-पत्रिकाएँ पाठकों के मानसिक विकास और मार्ग-दर्शन के लिए ज्ञानवर्द्धक, उच्च मूल्यों से पुष्ट, जीवंत जनहितकारक सामग्री का ही चयन करती थी। उन्होंने समकालीन स्वतन्त्र भारत की पत्रकारिता के समान सस्ती लोकप्रियता के प्रलोभन, विशेष सुविधाओं के मोह और सत्ता से लाभान्वित होने की शर्मनाक मनोवृत्ति से अपनी प्रतिष्ठा को कभी ठेस नहीं पहुँचायी। वे आधुनिक पीत पत्रकारिता के समान छिछली मानसिकता, धुरीहीनता और अधिकारों की भूलभुलैया में कभी नहीं भटकी थीं।

पत्रकारिता के दायित्व बहुआयामी हैं। प्रारम्भिक पत्रकारिता के उद्देश्य हिन्दी प्रचार, राजनीतिक-सामाजिक जागृति, साहित्यिक-सांस्कृतिक संरक्षण आदि थे जबकि समकालीन पत्रकारिता का उद्देश्य है "लोग जो माँगे वही देना चाहिए, हम जनता के विद्यागुरु नहीं, हम तो लोगों के सेवक हैं। ग्राहक को जिस माल की आवश्यकता हो, उसे ग्राहक तक पहुँचाकर उसे राजी रखना ही दुकानदार का आदर्श हो सकता है।"[2] अतः वर्तमान पत्रकारिता के क्षेत्र में व्यावसायिक मानसिकता और पूँजी का प्रवेश हो गया है।[3]

कहने का अभिप्राय यही है कि युग और परिवेश के साथ पत्रकारिता के उद्देश्य, रुचि, आदर्श एवं स्वरूप में मौलिक अन्तर आ गया है।

श्रेष्ठ पत्र-पत्रिकाओं के अनेक कार्य या उद्देश्य हो सकते हैं—

1. समष्टि हित के लिए ज्ञान-विज्ञान की सीमा का विस्तार करना।
2. लोक-शिक्षण एवं लोक-रुचि का परिष्कार करना।
3. नवीन क्रान्तिकारी परिवर्तन को दिशा एवं आन्दोलन को नेतृत्व प्रदान करना।
4. राष्ट्रीय एकता, लोकतंत्र तथा स्वतंत्रता आदि मूल्यों के लिए संघर्षरत रहना।
5. कला, साहित्य, संस्कृति, दर्शन एवं ज्ञान-विज्ञान को जनसंप्रेषणीय एवं सर्वसुलभ बनाकर जनमानस को अन्तर्दृष्टि एवं तर्क प्रज्ञा प्रदान करना।
6. बौद्धिक, समीक्षापरक, निष्पक्ष संपादकीय टिप्पणियों एवं आलेखों द्वारा अज्ञात सत्य एवं रहस्यमय तथ्यों का अनावरण एवं प्रसारण।
7. जन सामान्य में अन्याय एवं शोषण के विरुद्ध जनता का निर्माण।
8. साहित्यिक विधाओं की युगानुरूप अभिव्यक्ति एवं प्रगति।

---

1. सं० वेदप्रताप वैदिक, 'हिन्दी पत्रकारिता-विविध आयाम', पृ० 762
2. श्री काका कालेलकर, 'विशाल भारत', मई 1932, पृ० 581
3. डॉ० रमेश जैन, 'भारत में हिन्दी पत्रकारिता', पृ० 63

9. राष्ट्रीय साहित्य, भाषा तथा संस्कृति के प्रति सार्वजनिक अभिरूचियों का निर्माण।

निष्कर्षत: पत्रकारिता का उद्देश्य जनहित की दृष्टि से विश्व तथा राष्ट्र के समग्र पक्ष एवं जन-संवेगों को प्रतिबिंबित करने वाली नवीन सामग्री को एकत्रित, संपादित, संप्रेषित कर सर्वसाधारण का मार्ग दर्शन कर जनमत का निर्माण[1] करना होता है।

2. 3. पत्रकारिता, साहित्य और इतिहास

पत्रकारिता, साहित्य और इतिहास—वर्तमान काल में पत्रकारिता, साहित्य और इतिहास सर्वथा स्वतंत्र ज्ञान-प्रशाखाएँ हैं तथापि नव जागरण (रेनेसाँ) काल में साहित्य और साहित्येतर अनुशासन विषयबद्ध सीमा और संकीर्णता से उबरकर, प्रचण्ड सामूहिक ज्ञान-चेतना के रूप में समन्वित-सक्रिय हो गए थे। उनकी संरचना-स्वरूप, अनुभूति-अभिव्यक्ति में मौलिक अन्तर होते हुए भी उनके अन्त: सम्बन्ध अभिन्न-अन्तरंग रहे। उत्तर उन्नीसवीं शती के भारतीय जागरण-काल में भी साहित्यिक-सर्जना, ऐतिहासिक-लेखन और पुनर्व्याख्या हिन्दी पत्रकारिता के भी अविभाज्य अंग रहे।

इतिहास, पत्रकारिता आदि साहित्येतर और साहित्य अनुशासनों का लेखन-विश्लेषण-शोध आदि शुद्ध साहित्यिक अथवा केवल ऐतिहासिक-सामाजिक आदि एकांगी दृष्टिकोण तथा सीमित संदर्भों से करना न्यायोचित नहीं है। एक समग्र व्यापक दृष्टि और सेतु-निर्माण प्रक्रिया के लिए इन ज्ञान-प्रशाखाओं की लक्ष्मण रेखा पार कर समन्वित अध्ययन शोध अधिक उपयोगी और सार्थक सिद्ध हो सकता है। प्रस्तुत साहित्यिक ग्रंथ के साहित्येत्तर विषय-क्षेत्र पत्रकारिता और इतिहास की मूल चेतना, उद्देश्य और बुनियादी अन्तर की स्पष्ट समझ के लिए इनकी समानताओं और असमानताओं का तुलनात्मक अन्वीक्षण आवश्यक होगा।

स्वरूप साम्य—प्राय: पत्रकारिता, साहित्य और इतिहास तीनों का परिगणन कभी कला अथवा विज्ञान, कभी कला-विज्ञान दोनों ही श्रेणी में किया जाता है. वस्तुत: इनके कला विज्ञान का निर्णय विषय के आधार पर नहीं, बल्कि अध्ययन-पद्धति पर निर्भर करता है।

किन्तु इन तीनों अनुशासनों के विषय में इतना निश्चित रूप से सत्य है कि इन ज्ञान-माध्यमों द्वारा मानव जीवन की दीर्घकालीन चिन्तन-परम्परा, मानव सभ्यता और संस्कृति के विविध आयाम संप्रेषित-प्रतिम्बिबित होते हैं। ये तीनों राष्ट्र की वैचारिक-सांस्कृतिक-ऐतिहासिक परम्परा को उदबुद्ध करते हैं तथा राजनीतिक-सांस्कृतिक-आर्थिक सत्यों और ऐतिहासिक परिवर्तन-चक्र के प्रति सजग-सक्रिय रहकर मानव जाति के संघर्ष, अन्तर्विरोधों और विसंगतियों को भी ईमानदारी से निरूपित करते हैं।

मूल तत्त्व—पत्रकारिता के मूल तत्त्व हैं—संवेदनशील अनुभूति, निष्पक्ष विश्लेषणात्मक बुद्धि और संभावित सत्य को भाँप लेने वाली कल्पना-शक्ति और पत्रकारिता

---

1. राजेन्द्र शंकर भट्ट: पत्र, पत्रकार और पत्रकारिता, पृ० 35-42

की परिणति है—जीवन और जगत् के विविध आयामों की सहज बेलाग अभिव्यक्ति।

साहित्य के मूलाधार हैं—मार्मिक अनुभूति, सौन्दर्यमुक्त कल्पना और नीर-क्षीर-विवेकपूर्ण विचार और उसकी मूल संवेदना है—समग्र मानव जीवन।

इतिहास की भी आधार-भूमि है—विगतकाल अनुभवों पर तथ्याधारित कल्पना, कार्य-कारण-परिणाम युक्त तत्त्वालोचक बुद्धि, और (क्रोचे के मतानुसार) स्वात्मा से अनुभूत एक दृढ़ मत या भाव।[1] उसकी मूल सिद्धि है—सम्पूर्ण काल-बोध के आधार पर मानव की अन्तर्चेतना और सत्यों का उद्घाटन-विवेचन।

अतः कहा जा सकता है इन तीनों ही ज्ञान-प्रशाखाओं में अनुभूति, कल्पना और विचार बुद्धि का योग अनिवार्य होता है। और तीनों की परिणति है मानव जीवन जगत् के विविध आयामों की अभिव्यक्ति।

ध्येय—पत्रकारिता का मूल ध्येय है—जन-हित। गाँधीजी के अनुसार समाचार पत्र का एक उद्देश्य यह होना चाहिए कि वह जनता की भावनाओं को समझे और उसे अभिव्यक्त करे। दूसरा वह लोगों में उचित विचार का प्रसारण करे और तीसरा, वह निर्भय होकर दोष दिखाये।[2]

साहित्य के लोक मंगलकारी स्वरूप को इंगित करते हुए गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है।

कीरति भनिति भूति भल सोई।
सुरसरि सम सब कह हित होई॥[3]

(कीर्ति, कविता और सम्पत्ति वही उत्तम है जो गंगा की तरह सबका हित करने वाली हो)

इतिहास का मूल ध्येय भी है—मानव-हित के लिए सत्य और तथ्य का उद्घाटन और भ्रामक मिथ्या धारणाओं का प्रामाणिक साक्ष्यों के आधार पर खण्डन।[4] सुशोभन सरकार की भी धारणा है कि इतिहास केवल अतीत के क्षणों का चित्र नहीं है, न ही यह अतीत को घटना तथ्यों का एकत्रीकरण एवं विवरणमात्र है वरन् यह परस्पर विरोधी साक्षियों के गहन जाल से सत्यों की खोजकर उनकी पुनर्व्याख्या करता है।[5] छान्दोग्य-पनिषद ने इतिहास को पाँचवा-वेद कहा है।[6] महाभारतकार ने कहा है, 'मोह के अंधकार को दूर करने वाले इतिहास रूपी दीपक से संसार की सारी बातें ठीक-ठीक प्रकट हो जाती हैं।[7]

---

1. बेनीदितो क्रोचे, 'ईस्थिटिक', पृ० 226-23 पुनउर्द्धत राधाकुमुद मुखर्जी, हिन्दू सभ्यता (1990) पृ० 820 (पाद टिप्पणी)
2. काशीनाथ जोगलेकर, 'पत्र, पत्रकार और सरकार', पृ० 'दो शब्द'
3. रामचरित मानस, 1/13/5
4. सुशोभान सरकार'बंगाल रेनेसाँ एण्ड अदर एसे', पृ० 259
5. वही
6. छांदोग्यपनिषद्, 7/1/1
7. महाभारत, 1/1/83

संक्षेप में तीनों ही ज्ञान-माध्यमों का अन्तिम ध्येय 'जनहित' है तीनों मानव जगत के सत्यों, अधःपतन और चरमादर्शों का प्रस्तुतिकरण करते हैं और हर बात की तह तक पहुँचने वाली अन्तर्दृष्टि द्वारा लोकमानस की आशा-हताशा, भावनाओं और विचार-धाराओं के अन्तर्विरोधों और अन्तर्द्वन्द्व को गहराई से मुखर करते हैं।

विषय-क्षेत्र—वस्तुत: पत्रकारिता, साहित्य और इतिहास का विषय-क्षेत्र क्षितिज इतना व्यापक है कि इनमें कला-विज्ञान, दर्शन-संस्कृति, समाज-राजनीति आदि सभी अनुशासन अन्तर्भुक्त हो जाते हैं। अत: पत्रकारिता को साहित्यिक सर्जना और इतिहास-रचना की प्रमाणिक सामग्री सन्दर्भों के रूप में प्रयोग करना वांछनीय होगा। आधुनिक हिन्दी साहित्य का पोषण और विकास तो पत्रकारिता की क्रोड़ में ही हुआ है। राष्ट्रीय इतिहास और साहित्य लेखन-परम्परा में पत्र और पत्रकारों की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है। उन्होंने औपनिवेशिक प्रशासकों और अंग्रेजी इतिहासकारों द्वारा प्रचारित ऐतिहासिक भ्रांतियों और मिथ्या धारणाओं जिनमें विशेष रूप से "यह विचार अंतर्निहित था कि इस उपमहाद्वीप के इतिहास में जितने शासक आज तक हुए हैं, ब्रिटिश शासन उन सबकी तुलना में श्रेष्ठ है।[1] आदि पर तीखी प्रतिक्रिया द्वारा मत-खंडन करना अपना महत्त्वपूर्ण दायित्व समझा।

आदर्श प्रतिमान—आदर्श पत्रकार की परिकल्पना प्रस्तुत करते हुए गणेशशंकर विद्यार्थी का कथन था 'पत्रकार अपने विवेक के अनुसार अपने पाठकों को ठीक मार्ग पर ले जाता है, वह जो कुछ लिखे प्रमाण और परिणाम पर विचार करके लिखे और अपनी गति-मति में शुद्ध और विवेकशील रहे। पैसा कमाना उसका ध्येय नहीं, लोकसेवा उसका ध्येय है।[2]

सच्चा साहित्यकार भी सत्य का प्रचारक, उद्घोषक और विस्तारक होता है। वर्डस्वर्थ ने कहा भी है, "अपने आदर्श, कल्पना और चिन्तन के स्वर्ग और पैरों के नीचे पड़ी घर की जमीन दोनों के प्रति समान रूप से सच्चा रह सकना साहित्यकार की चरम सफलता है।"[3]

आदर्श इतिहासज्ञ वह है "जिसके पास अध्येय विषय के तथ्य और घटनाओं को जाँचने की योग्यता है, जिसके पास अतीत को यथावत प्रतिबिम्बित और पुन: प्रस्तुत करने के लिए दर्पण जैसी यांत्रिक सच्चाई और अविकलता है, जिसके पास सामग्री को छानने और पूछताछ करने के लिए वकील जैसी तर्क बुद्धि, है जिसके पास न्यायमुक्त भाव, सूझ-बूझ और आँख है।[4]

अत: आदर्श पत्रकार साहित्यकार और इतिहासकार के राष्ट्र और विश्व के प्रति दायित्व, गुण और प्रतिबद्धता समान है।

---

1. रोमिला थापर, भारत का इतिहास पृ० 13-14
2. विष्णुदत्त शुक्ल, पत्रकार कला, (दो शब्द 'ब')
3. पुनउर्द्धत बालकृष्ण राव, आलोचना त्रैमासिक अक्टूबर, 1957 पृ० 36
4. राधाकुमुद मुखर्जी, हिन्दू सभ्यता, पृ० 19-20

वैषम्य—किन्तु पत्रकारिता, साहित्य और इतिहास को एक दूसरे का पर्याय नहीं माना जा सकता। इन तीनों अनुशासनों के स्वरूप, दृष्टि और रचना-शिल्प को एक मानना सत्य से मुख मोड़ना होगा क्योंकि पत्रकारिता के अनेक रूप साहित्य अथवा इतिहास नहीं कहे जा सकते और इतिहास, साहित्य की अनेक विशेषताएँ पत्रकारिता में नहीं हैं।

व्युत्पत्तिपरक अर्थ की दृष्टि से वे एक दूसरे से भिन्न हैं। पत्रकारिता (पत्र कृ-णिनि + तल + टाप = प्रत्ययों) वह विद्या है जिसमें पत्रकारों के कार्यों और उद्देश्यों का विवेचन होता है।[1] 'साहित्य' (सहित + यत्) में सहभाव अर्थात् साहित्य मनुष्य के प्रभावों और विचारों की समष्टि है।[2] 'इतिहास' (इतिह + आस—घञ्) 'जो हो गया' अर्थात् प्राचीन पुरावृत्त कथा ही इतिहास है।[3]

पत्रकारिता घटनाओं और विचारों का व्यवस्थित क्रम एवं मानव जीवन और राष्ट्र की समस्त गतिविधियों, कार्यकलापों एवं चिन्तन की यथार्थपरक बेलाग अभिव्यक्ति है। प्रसिद्ध अमरीकी पत्रकार आर्थर ब्रिसबेन ने 1912 ई० में कहा था 'समाचार पत्र' इतिहास की घड़ी में सैकिंड की सुई है लेकिन वह सुई ठीक समय नहीं दे पाती। हमेशा पत्रकारिता कला में तथ्य को अतिशयोक्ति पूर्ण अंदाज में प्रस्तुत किया जाता है। समाचार पत्र एक आतशी शीशे की तरह है।[4]

इसके विपरीत, साहित्य न तो बेलबूटों की सजावट और नक्काशी है और न समाचार पत्र की खबर या पार्टी प्रोग्राम का परचा। साहित्य जीवन का पुनः सृजन और सामाजिक यथार्थ की कलात्मक अभिव्यक्ति है।[5]

इतिहास केवल घटनाओं और व्यक्ति के जीवन वृत्त का संग्रह नहीं है, न वह विचारधाराओं का आकलन मात्र है, वह समग्र मानव चेतना की सक्रियता का विवेचनात्मक अभिलेख है जो परम्परा का आकलन, आलेखन और विश्लेषण काल क्रमानुसार करता है यह निरन्तर विकासशील मानव समाज का अध्ययन है जो अतीत को समझने की सामर्थ्य, वर्तमान को आकलन की बुद्धि और भविष्य को संकेतित करने की समझ प्रदान करता है।[6]

पत्रकारिता, साहित्य और इतिहास का सत्य

साहित्य में असीम सौन्दर्ययुक्त सत्य की जिज्ञासा का भाव होता है किन्तु यह सत्य ऐतिहासिक घटनात्मक आकलन के आधार पर नहीं, सौन्दर्य और कल्पनात्मक बिम्ब

1. मानक हिन्दी कोश, तीसरा खंड, पृ० 380
2. हिन्दी साहित्य कोश
3. विश्व हिन्दी कोश, वोल्यूम III, पृ० 25
4. सुशोभन सरकार, बंगाल रेनेसाँ एण्ड अदर एसे, पृ० 260
5. रमाकांत शर्मा, आलोचना (त्रैमासिक) अक्टूबर-दिसम्बर 1985, पृ० 35
6. डा० नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ० 40-43

प्रतीकों द्वारा मूर्त होता है। काव्यगत सत्य तथ्यपरक न होकर संभाव्य बातों को लेकर व्यंजित होता है।

किन्तु पत्रकारिता में सत्य का अभिधापरक, तथ्यपूर्ण, निष्पक्ष चित्रण होता है। इतिहास के सत्य के विषय में 14वीं शती के अरब इतिहासकार इब्न खलदुन का कथन है, इतिहास मानव सभ्यता और समाज के परिवर्तन की कहानी है यह वर्गों के परस्पर संघर्ष और विद्रोह का विवरण है, यह समाज के पुर्ननिर्माण और रूपातंरण का वर्णन है। सच्ची ऐतिहासिक वास्तविकता, समाज के परिवर्तन और वैज्ञानिक विश्लेषण को इतिहास जीवंत बनाता है।

संवेदना और शिल्प में अन्तर

इतिहास में अतीत का, पत्रकारिता में सम सामयिकता और युगीन धारा का प्रभाव अधिक होता है जबकि काव्यगत सत्य सार्वभौम, सार्वकालीन और शाश्वत होता है। उसकी वृत्ति सत्य कथन में अमूर्तता और सूक्ष्मता की ओर होती है अतः जहाँ साहित्य शाश्वत मूल्यों का अन्वेषण करता है, पत्रकार तात्कालिक तथा इतिहासज्ञ अतीत का।

साहित्य हृदय की संवेदना परक अभिव्यक्ति है। पत्रकारिता और इतिहास निर्वैयक्तिक, तर्क प्रधान तथ्यों का वैचारिक प्रस्तुतीकरण है पत्रकार और इतिहासकार सामाजिक-राजनीतिक स्थिति का वस्तुनिष्ठ तटस्थ आकलनकर्त्ता है जबकि साहित्यकार जीवन की अनुभूतियों को आत्मसात कर काल्पनिक बिम्ब सर्जना करता है। साहित्य में चेतना तथ्य पर अपना शासन जमा कर प्रकट होती है इतिहास में तथ्य और कल्पना का सामंजस्य होता है वे एक दूसरे के अधीन नहीं होते। इतिहासकार का कार्य विस्तृत घटनाओं को फिर से जीवित करना है जिसके मूल स्रोत प्राचीन ग्रन्थ, शिलालेख, ताम्र-पत्र, प्राचीन मुद्राएँ, शिल्प पत्र आदि हैं आधुनिक इतिहास मूलचेतना और सांस्कृतिक उपलब्धियों पर अधिक बल देता है तथा काल को अविच्छिन्न धारा के रूप में निरूपित करता है।

इन असमानताओं के होते हुए भी पत्रकारिता की एक विशिष्ट ऐतिहासिक एवं साहित्यिक-वंश की परम्परा रही है तथा हिन्दी के श्रेष्ठ साहित्यकार भारतेन्दु, प्रताप-नारायण मिश्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, गुलेरी, प्रसाद, निराला, प्रेमचन्द से लेकर अज्ञेय, नामवर सिंह, राजेन्द्र यादव आदि ने श्रेष्ठ पत्रिकाओं का प्रकाशन, संचालन, संपादन, लेखन आदि करके पत्रकारिता की नवगरिमा और दिशा दी है। नवीन साहित्यकार पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से ही प्रौढ़ साहित्य का सृजन कर पाते हैं तथा नित नवीन कल्प-नाओं, टटके भावों और विचार-आंदोलनों का प्रसार करते हैं। इतिहासकारों की रचनाओं का भारतीय साहित्यिक दृष्टि से भी महत्त्व निर्विवाद है। प्राचीन, मध्यकालीन तथा आधुनिक साहित्य और पत्रकारिता के अध्ययन के लिए रोमिला थापर, राधाकुमुद मुखर्जी, रामशरण शर्मा, इरफान हबीब, मोहम्मद हबीब, सतीशचन्द्र, विपनचन्द्र, सुमित

सरकार, रज़त रे, धूर्जटि मुकर्जी, धूर्ये, डेनियल आर्थर, ए० आर० देसाई, एम० एन० श्रीनिवास आदि की ऐतिहासिक अवधारणाओं का ज्ञान आवश्यक है, वहीं ऐतिहासिक लेखन और पुनर्व्याख्या की पूर्णता के लिए पत्रकारिता और साहित्य से संदर्भ-सामग्री लेना भी उपयोगी होगा।

यद्यपि पत्रकारिता न साहित्य है न इतिहास। तथापि यह भ्रामक धारणा निराधार है कि वह केवल सूचना और प्रचार का सस्ता-घटिया जन माध्यम है वस्तुतः अधिकांश देशी भाषाओं की पत्रकारिता ऐतिहासिक-साहित्यिक सामग्री, भाषा, अभिव्यंजना, शिल्प और राष्ट्रीयता की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। प्रस्तुतिकरण और चिन्तन में अनुभूति और ऐतिहासिक नवजागरण के महत्त्वपूर्ण तथ्य छिपे हुए हैं।

2. 4. पत्रकारिता-ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

2. 4. 1. पुरातन समाचार माध्यम : प्राचीन समय में समाज में सम्पर्क एवं संप्रेषण का माध्यम प्रकृति, संदेशवाहक पक्षी, भोज एवं ताड़ पत्र थे।[1] पौराणिक कथाओं में 'नारद' मुनि का चित्रण तीनों लोकों के समाचारों के संवाहक और संप्रेषणकर्त्ता के रूप में किया गया है। 'महाभारत' में संजय द्वारा धृतराष्ट्र को युद्धस्थल में घटित समस्त सूचनाओं की जानकारी दी गई है। शासक वर्ग अपनी प्रजा को डोंडी पिटवा कर राजाज्ञाओं तथा विशेष समाचारों का ऐलान करवाते थे। प्राचीन मुद्राएँ, अशोक आदि सम्राटों के उत्कीर्ण शिलालेख एवं स्तम्भों में लिखित घोषणाएँ, ताड़पत्रों पर लिखे महाकाव्य, सन्त, चारण, भाटों की मौखिक पद्यबद्ध रचनाएँ, अनेक मत सम्प्रदायों के गुटके, हरकारों गुप्तचरों द्वारा भेजे जाने वाले समाचारपत्रक आदि जन-संप्रेषण के प्रारम्भिक माध्यम थे जो मुद्रणालय के जन्म के साथ ऐतिहासिक अवशेष बन गए थे।[2]

प्राचीन भारत में आधुनिक पत्र-पत्रिकाओं जैसी कोई मुद्रित सामग्री उपलब्ध नहीं होती। इसका कारण मुद्रण यन्त्रों का अभाव, औद्योगिक पूँजीवादी व्यवस्था की कमी, संचार साधनों की न्यूनता एवं पत्रकारिता विषयक ज्ञान का अभाव था। शासकीय स्तर पर केवल विदेशी राजदूत, कूटनीतिज्ञ, विभिन्न देशों के यात्री और व्यापारी एवं गुप्तचर आदि सभी प्रकार की उपयोगी सूचनाएँ उपलब्ध कराने के माध्यम थे।

संस्कृत ग्रन्थों में 'समाचार', 'पत्र' एवं 'पत्रिका' शब्दों का प्रयोग मिलता है किन्तु आधुनिक अर्थ से भिन्न रूप में। 'पंचतन्त्र', 'वाल्मीकि रामायण' आदि में 'समाचार' शब्द उचित चाल-चलन एवं आचरण के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।[3] जो संस्कृत

---

1. संस्कृत वाङ्मय में दमयन्ती के संदेशवाहक हँस थे, यक्ष ने मेघदूत को माध्यम बनाया था। शकुन्तला कमल पत्रों पर उद्‌गार व्यक्त करती थी।
2. सं० वेदप्रताप वैदिक, पत्रकारिता : विविध आयाम।
3. (क) "ताम्बूलादि समाचारकर्त्तव्योहि सदा भवेत्"—पंचतन्त्र अर्थात पान सुपारी खिलाने का शिष्टाचार करना चाहिए।
   (ख) 'असत् स्त्रीणाम् समाचार'—बाल्मीकि रामायण-सरस्वती, सितम्बर 1959, पृ०, 161-164

में 'समाचार' का व्युत्पत्तिपरक अर्थ (सम आ+चर्+घञ्) है।[1] तुलसीकृत 'रामचरितमानस' में 'समाचार' शब्द किसी कार्य की 'सूचना' या 'खबर' के अर्थ में आया है।[2] हिन्दी में इसका आधुनिक कोशीय अर्थ है—'संवाद, खबर, ऐसी ताजा हाल की घटना की सूचना जिसके सम्बन्ध में लोगों को जानकारी न हो—न्यूज''।[3]

संस्कृत वाङ्मय में 'पत्र' शब्द 'पत' धातु (गिरना) में स्ट्रन प्रत्यय के योग से निर्मित है जिसका अर्थ 'कागज', 'पट्टा' या 'दस्तावेज' है।[4] हिन्दी में 'पत्र' शब्द का एक अर्थ 'समाचार पत्र या अखबार' से है।[5]

संस्कृत भाषा में 'पत्रिका' शब्द की व्युत्पत्ति 'पत्री+कन्+टाप+ह्रस्व' आदि के योग से हुई है।[6] इसका शाब्दिक अर्थ 'चिट्ठी', कोई छोटा लेख या लिपि का टुकड़ा है। 'रामचरित मानस' में यह शब्द चिट्ठी के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।[7] मानक हिन्दी कोश में इसका अर्थ—''प्राय: नियमित रूप से निकलने वाली ऐसी पत्रिका जिसमें विषयों के लेख, कहानियाँ, कविताएँ होती हैं जैसे सम्मेलन पत्रिका''।[8]

2. 4.2 मध्यकालीन समाचार पत्रक

मध्यकाल में भारतीय शासकों को 'पत्रकार-कला' का ज्ञान था। यद्यपि मुद्रणालय द्वारा कहीं भी पत्र प्रकाशित नहीं हुए थे किन्तु मुगल शासन-व्यवस्था में समाचार-संकलन एवं लेखन के लिए एक पृथक विभाग में 'वाकयानवीस' और 'अखबारनवीस' आदि लेखकों की नियुक्ति की जाती थी।[9] इन लेखकों द्वारा लिखित हस्तलिखित पत्रक—'अखबाराते-ए-दरबारे-मुअल्ला' 'पैगामे हिन्द', 'पुणे अखबार' आदि आधुनिक सन्दर्भ में पत्र-पत्रिका कहलाने के अधिकारी नहीं हैं क्योंकि इनका लेखन जनहितकी दृष्टि से जनता को जानकारी देने के लिए नहीं होता था, ये पत्र मुगलशासकों एवं राजदरबारों के उपयोग के लिए प्रकाशित किए जाते थे। इनके समाचार सीमित विषयों तथा शासकीय कार्य-कलापों से सम्बन्धित होते थे। इन मध्यकालीन हस्तलिखित औसतन 6 इंच लम्बे, साढ़े चार इंच चौड़े पत्रकों का उल्लेख इतिहास लेखक रफी खाँ

---

1. संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ, पृ०, 1223
2. 'समाचार सब लोगन्ह पाए, लागे घर-घर होन बधाए'—रामचरितमानस 1/285/1
3. (क) मानक हिन्दी कोश, पाँचवाँ खण्ड पृ०, 284
   (ख) विष्णुदत्त शुक्ल, पत्रकार कला पृ०, 19
4. संस्कृत शब्दार्थ-कौस्तुभ, पृ०, 652-53
5. हिन्दी शब्द-सागर, छठा भाग, पृ० 2798
6. संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ, पृ० 652
7. 'पुनधरिधीर पत्रिका बाँची'—रामचरित मानस 1/289/3
8. मानक हिन्दी कोश, तीसरा खण्ड पृष्ठ 1223
9. सं० अंबिका प्रसाद वाजपेयी, समाचार पत्रों का इतिहास, प्रस्तावना, पृ० 1

की पुस्तक 'मुंतखब-उल-तुबाब'[1], फ्रांसीसी डॉक्टर फ्रैंको बर्नियर लिखित 'ट्रेवल्स इन दी मुगल अम्पायर' (पृ० 231), वेनिस पर्यटक निकोला मनूची कृत 'स्टोरिया डीमोगोर' (पृ० 331-32) भारत में कार्यरत डॉ० जानफ्रायर और स्लीमैन आदि के वक्तव्यों और ग्रन्थों में उपलब्ध है।[2] जयपुर आदि राजपूत रियासतों में भी राज्यों की प्रमुख घटनाओं की जानकारी शासकों को देने की प्रथा 'शाहवाकया' आदि में मिलती है। एच०सी० टिक्कीवाल 'जयपुर एण्ड दी लेटर मुगल्स' (पृ० 197) पुरानी राजस्थानी में भाषा में लिखे समाचारों के उदाहरण दिए हैं[3]—

"श्री महाराज पुलन्दरगढ़ लियो अर श्री जी की फतह हुई—अर सैबी, आणि मिल्यों।" सावण बुदी। वि० सम्वत् 1722 (जून 26, 1665 ई०)

"हजूर न ज्यो सइदा सू राड़ की खुबर दी अर पातशाह की फतह की कही वानै श्री जी जड़ाऊ पौछी जोड़ी बक्सी"— सम्वत् 1777 न पातसाही जंग मैं सद्दा सू बहादरी सूं लड़ता मरया गया—(शुक्रवार मंगसर वुदी।, वि० सम्वत् 1777) नवम्बर 1720। ये मध्यकालीन समाचार पत्रक जनता का प्रतिनिधित्व नहीं करते थे। इनको पत्रकारिता का पूर्वज कहा जा सकता है।

2. 4. 3. आधुनिक मुद्रणकला का जन्म

आधुनिक मुद्रणकला के आविष्कारक के रूप में गुटेन्बर्ग (1394-1469 ई०) का नाम लिया जाता है यद्यपि इसके प्रारम्भिक जन्मदाता चीनी माने जाते हैं। गुटेन्बर्ग ने 1452 ई० के लगभग प्रतिपृष्ठ 42 पंक्तियों में बाइबिल प्रकाशित की थी तथा अपने छोटे-छोटे परिपत्रों (पैम्फलेट) में पोप की आज्ञा प्रकाशित कर प्रिंटिंग प्रेस की नींव जर्मनी के मेंज नगर में डाली।[4]

आधुनिक प्रेस किसी एक राष्ट्र की उपज नहीं है, यह राष्ट्रों में विकास की लम्बी प्रक्रिया की देन है।[5]

ई० पूर्व० 60 में रोम में समाचारों का नियमित संग्रह जूलियस सीजर ने 'एक्टाडार्यना' (Actadwrana) 'एक्टा सिनेटस' तथा 'एक्टा पब्लिका' के रूप में सरकारी घोषणाओं, रोमन सीनेट और जनसाधारण को वित्त सम्बन्धी जानकारी देने के लिए हस्तलिखित रूप में कराया था। किन्तु नियमित रूप में जनता के लिए हस्तलिखित

---

1. "इस इतिहास लेखक ने लिखा है कि शिवाजी के वंशज राजाराम की मृत्यु का समाचार संवाद पत्रों द्वारा शाही शिविर में पहुँचा था"— मार्ग ग्रीटा बार्न्स, द इण्डियन प्रेस, पृ० 22-23
2. एम० चलपति राव, समाचार पत्र, पृ० 9-10
3. एच० सी० टिक्कीवाल, जयपुर एण्ड दी लेटर मुगल्स, पृ० 197
4. श्री कृष्णाचार्य, हिन्दी के आदि मुद्रित ग्रन्थ, पृ० 2
5. एडविन हमरी, द प्रेस एण्ड अमेरिका (द्वितीय संस्करण), पृ० 4-5

असरकारी प्रकाशन ओग्सबर्ग, वायना, रैटिस्बन आदि नगरों में चिट्ठियों के रूप में हुआ। प्रथम सरकारी पत्र 1556 ई० वेनिस नगर से प्रकाशित हुआ जिसकी हस्तलिखित प्रतियाँ नगर के विशेष स्थानों पर चिपका दी जाती थीं और नागरिकों को इन्हें पढ़ने के लिए मूल्य (गजटा) देना होता था। गजट शब्द की व्युत्पत्ति 'गजटा' से हुई प्रतीत होती है।[1]

मुद्रित पुरातन समाचार पत्रों की उपलब्ध प्रतियों में इंग्लैण्ड से प्रकाशित एक पृष्ठीय 'न्यूज आउट ऑफ केंट' (1561) ई०) तथा ओग्सबर्ग से प्रकाशित 'एविश रिलेशन अडेर जीटूंग' (1609) की पूरी फाइल और 'रिलेशन' 'कोंराट' (सितम्बर, 1621) आदि की प्रतियाँ प्रमुख हैं।[2]

2. 5. भारत में आधुनिक पत्रकारिता : उद्भव और विकास

2. 5. 1. पत्रकारिता की प्रमुख प्रेरक शक्ति भारत में प्रेस की स्थापना (6 सितम्बर, 1556 ई०) थी।[3] भारतीय भाषा में सर्वप्रथम मुद्रित पुस्तक सम्भवत: जेण्ट जेवियर कृत 'डाक्ट्रिना क्रिस्तओ' (पुर्तगाली भाषानुवाद, 1557 ई०) थी।[4] नागरी टाइप का प्रयोग सबसे पहले यूरोप में प्रकाशित पुस्तक अथानासी किर्चरी कृत 'चाइना इलस्ट्रेटा' (1667 ई०) में हुआ था।[5] रोम से प्रकाशित पुस्तक ('एल्फाबेट्स ब्राह्मणीकम् सिउ इन्दोस्तानम् उनर्वसिटाटिस काशी' (1771 ई०) में पहली बार नागरी के चल टाइप (मूवेबल) का प्रयोग हुआ। इस पुस्तक में भाखां बोली, व्याकरण, वर्णमाला और सात-आठ पृष्ठों में हिन्दी गद्य दिया गया है जो उस युग में भी नागरी लिपि के प्रचलन और लोकप्रियता को सूचित करता है। भारत में नागरी लिपि के टाइप हुगली के विल्किन्स तथा पंचानन कर्मकार के प्रयासों से निर्मित हुए। ईसा धर्म प्रचारकों ने बम्बई, विपिन कोटा, तमिलनाद, कलकत्ता आदि में अनेक प्रेस धार्मिक पुस्तकों के प्रकाशन के लिए स्थापित कर लिए थे किन्तु 1780 ई० के पूर्व पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन किसी भी भाषा में प्रारम्भ नहीं हो पाया था। इसका मुख्य कारण ईस्ट इण्डिया कम्पनी की पत्रकारिता के प्रति स्वतन्त्रता विरोधी नीति थी। उसके अधिकारी वर्ग को यह भय और आशंका रहती थी कि अंग्रेजी पत्रों द्वारा भ्रष्टाचार, लूट, पक्षपात आदि निंदनीय भ्रष्ट कार्यों की इंग्लैण्ड तक सूचना पहुँच जाएगी।[6] अत: प्रेस और सरकार के

---

1. (क) Folke Delhi (ed) the Birth of the European Press, 1960 पृ० 4
   (ख) इन्द्र वाचस्पति, पत्रकारिता के अनुभव, पृ० 80-81
2. सं० वेद प्रताप वैदिक, हिन्दी पत्रकारिता: विविध आयाम, पृ० 22
3. डा० रामचन्द्र तिवारी, पत्रिका संपादन कला, पृ० 81
4. श्री कृष्णाचार्य, हिन्दी के आदि मुद्रित ग्रन्थ, पृ० 7
5. वही, पृ० 8-9
6. एम० चलपतिराव : समाचारपत्र, पृ० 13

बीच संघर्ष-परम्परा उतनी ही पुरानी है जितनी स्वयं प्रेस ।[1]

2. 5. 2. अंग्रेजी पत्रकारिता का आविर्भाव—भारत भूमि में पत्रकारिता का ऐतिहासिक प्रारम्भ कम्पनी से असन्तुष्ट स्वतन्त्र व्यापारी अंग्रेजों द्वारा हुआ ।[2] इस दिशा में पहला असफल प्रयत्न विलियम बोल्ट नामक व्यापारी ने (1768) समाचार पत्र प्रकाशन के लिए कलकत्ता के सार्वजनिक स्थलों पर नोटिस लगा कर किया ।[3] कम्पनी के कोर्ट ऑफ डायरेक्टर्स ने उसे 18 अप्रैल, 1777 को तुरन्त आदेश देकर यूरोप के लिए रवाना कर दिया ।[4]

इसके बारह वर्ष पश्चात् 29 जनवरी 1780 ई० को जेम्स आगस्त हिके ने भारत की धरती पर पहला अंग्रेजी समाचार पत्र 'बेंगाल गजट आव कैलकेटा जेनरल एडवरटाइजर' या 'हिके गजट' प्रकाशित किया ।[5] यह साप्ताहिक पत्र आकार में लघु द्वि-पृष्ठीय था लेकिन पत्रकारिता की स्वाधीन चेतना, दुःसाहस और निर्भीकता में अग्रणी था। तत्कालीन अंग्रेज उच्चाधिकारियों गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स, कर्नल थोमस, डीन पीयरस, मुख्य न्यायाधीश ईलीजाह ईम्पों आदि के निजी जीवन, नीतियों तथा तत्कालीन प्रशासनिक भ्रष्टाचार, बुराइयों का लगातार पर्दाफाश करने पर 14 नवम्बर, 1780 को हिके को पोस्ट आफिस के विशेषाधिकार से वंचित कर दिया गया। जून, 1781 को उसे निर्दयता से पीट कर, 5000 रुपये दण्ड देकर कारावास में डाल दिया गया। लेकिन प्रेस की स्वतन्त्रता के समर्थक ने जेल से ही गजट का सम्पादन कर अपने उग्र विरोधी स्वर को अन्त तक न बदला। प्रारम्भिक अंग्रेजी पत्रों की विषय सामग्री का अनुमान 'हिके गजट' की 23 दिसम्बर 1780 की विषय-सूची से लगाया जा सकता है ।[6]

विषय सूची—Advertisement, News from Madras, Calcutta intelligence from the chrismas fall, Extract of a letter from Chandernagar, Proclamations. All persons, to be sold, to be Public, Poet's corner, Notice, wanted, To lett.

'हिके गजट' की सूची से स्पष्ट है कि विज्ञापन, सम्पादक के नाम पत्र, रोजगार, मकान सम्बन्धी सूचनाओं आदि का सूत्रपात इस प्रारम्भिक पत्र से ही हो चुका था। 18वीं के अन्य प्रमुख पत्रों में 'कलकत्ता गजट' (1780), 'बंगाल जनरल' (1785) 'ओरियन्टल मैगजीन' (1785) 'कलकत्ता क्रोनिकल' (1786) 'मद्रास कूरियर'

---

1. Sushila Agrawal, Press, Public and Politics Page 11-12
2. अंविका प्रसाद वाजपेयी, समाचार पत्रों का इतिहास, पृ० 27-28
3. एस० नटराजन, हिस्ट्री ऑफ दि प्रेस इन इण्डिया, पृ० 17
4. प्रोसिडिंग्स ऑफ दी सैलक्ट कमेटी एट दा कांसिल ऑफ कोर्ट विलियम ।
5. वी० अय्यर, द इंडियन प्रेस, पृ० 4-5, 28-29
6. 'हिके गजट' की माइक्रोफिलम नेहरू मेमोरियल लाइब्रेरी, नई दिल्ली में सुरक्षित है ।

(1785) 'बम्बई हेरल्ड' (1789 ई०) आदि थे। सन् 1780-1823 ई० तक अनेक अंग्रेजी पत्र-पत्रकाओं को अपनी ही शासक जाति के कठोर नियन्त्रण, सेंसर, इंग्लैण्ड निर्वासन, जुर्माना आदि का दण्ड सरकारी कार्यों की आलोचना के कारण भुगतना पड़ा था।[1] मई, 1799 के प्रेस अधिनियम के अन्तर्गत मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक को अपने नाम, छपित सामग्री की घोषणा सचिव के समक्ष करनी होती थी। नियमों में शासित क्षेत्रों में विद्रोह भड़काने वाली टिप्पणियों, कम्पनी की वित्तीय स्थिति, निजी घोटालों आदि को मुद्रित न करने की हिदायत थी।[2] 7 अप्रैल, 1807 में सार्वजनिक सभाओं पर रोक लगाने के बाद भूमिगत पत्रों का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ।

प्रारम्भिक अंग्रेजी पत्रकारिता का प्रकाशन केवल अंग्रेजी भाषा में अंग्रेज सम्पादकों-प्रकाशकों द्वारा, अंग्रेज व्यापारी पाठकों के मनोरंजन और जानकारी देने के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए हुआ था। भारतीय जनता का न तो इन पत्रों से सम्पर्क-सम्बन्ध था, न ये पत्र उनके हितों का प्रतिनिधित्व करते, न इन पत्रों की भारतीयों के लिए कोई उपयोगिता थी। इनका ऐतिहासिक महत्त्व इतना अवश्य माना जा सकता है कि इन्होंने भारतीय भाषाओं की पत्रकारिता के लिए नींव और ढाँचे का निर्माण कर दिया था तथा पत्रकारिता की स्वाधीनता के लिए संघर्ष-परम्परा का सूत्रपात किया। सिल्क बकिंघम के 'केलकटा जनरल' जैसे स्वाधीन पत्रों ने भारतीय पत्रकारिता के समक्ष स्वतन्त्र, संघर्षपूर्ण पत्रकारिता का आदर्श दृष्टान्त प्रस्तुत कर उन्हें प्रेरित-प्रभावित किया था।

2.5.3. स्वदेशी भाषाओं की पत्रकारिता और राममोहनराय : भारत में पत्रकारिता के अभ्युदय में यद्यपि अंग्रेजी पत्रकारिता की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी तथापि राष्ट्रीय गौरव की दृष्टि से देश की सामाजिक-संस्कृति समस्याओं को प्राधान्य देने वाली, राष्ट्रहित से जुड़ीत था उनका प्रतिनिधित्व करने वाली पत्र-पत्रिकाएँ देशी भाषाओ की ही थीं। देशी पत्रकारिता विदेशी भाषा, अंग्रेज पाठकों, व्यक्तिगत आक्षेपों टिप्पणियों और कम्पनी की कठोर आलोचना मात्र तक ही सीमित नहीं थी, उसका दृष्टिकोण सर्वथा स्वदेश परक, राष्ट्रीय-निर्माण और जनजागृति का था। राष्ट्रीय अभ्युत्थान के लिए लोकमानस को उद्‌बुद्ध कर उन्हें आधुनिकता, वैज्ञानिक विचारों एवं ज्ञान-विज्ञान से संप्रक्त करना था।[3] देशी पत्रकारिता की महान् प्रेरक-शक्ति राजा राममोहन राय ने पत्रकारिता को जन-हितों से जोड़ कर जहाँ एक ओर सती प्रथा, बाल विवाह जैसी

1. हेमेन्द्र प्रसाद घोष—द न्यूज पेपर इन इंडिया, पृ० 39
2. एम० चलपति राव, समाचार पत्र, पृ० 22-23
3. देशी पत्रकारिता के संबंध में रेव० जे० लोंग (1859 ई०) की टिप्पणी द्रष्टव्य है— 'भारतीय समाचार पत्र देखने में विनीत मालूम होते हैं, लेकिन किसी जाति के युद्ध गीतों की भाँति वहाँ काम करते हैं और जैसे तिनकों के उड़ने से हवा का रुख पता चलता है उसी से ये दिशा-निर्देश देते हैं। उनमें सती प्रथा, जाति प्रथा, विधवा विवाह, बहु विवाह के प्रश्नों पर दोनों पक्षों के विचार बड़ी कुशलता से प्रस्तुत किये जाते हैं।' उद्धृत एम० चलपतिराव, समाचार पत्र, पृ० 75

रूढ़ियों के विरुद्ध जनमत तैयार किया, वहीं दूसरी ओर हिन्दू धर्म के कटु आलोचक मिशनरी पत्रों 'समाचार दर्पण', 'दिग्दर्शन', आदि का मुँहतोड़ प्रतिकार किया।[1] भारतीय संस्कृतिक धर्म के रक्षार्थ राजा राममोहन राय और सहयोगी पत्रकारों ताराचंद दत्त, भवानी चरण बनर्जी, हरूचन्द्र राय, गंगाकिशोर भट्टाचार्य आदि ने 'बंगाल गजट' (अंग्रेजी) 'संवाद कौमुदी' (बंगला 1819) 'ब्रह्ममैनिक्ल मैगजीन' (अंग्रेजी 1821 ई०) 'मीरातउल अखबार'(फारसी 1822) बंगदूत'(हिंदी, बंगला बहुभाषी1829 ई०), 'बेंगाल हेरल्ड' (1829) आदि पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित कीं। राजा राममोहन राय ने अंग्रेजी कम्पनी, रूढ़िवादी भारतीयों, ईसा-मिशनरियों के आक्रमणों का लोहा लेने के लिए 'शिव प्रसाद शर्मा' के नाम से कई लेख लिखे तथा सुप्रीम कोर्ट में एडम द्वारा लागू किये गये 'प्रेस अध्यादेश' (1823 ई०) के विरुद्ध सुप्रीम कोर्ट में अर्जी दी जिसे नामंजूर करने पर उन्होंने विरोध स्वरूप 'मिरात-उल-अखबार' का प्रकाशन बंद कर दिया था।

सितम्बर, 1828 ई० की जी० स्टाक वैल की रिपोर्ट के अनुसार अंग्रेजी भाषा में दो दैनिक, तीन अर्द्धसाप्ताहिक, एक फारसी का साप्ताहिक पत्र प्रकाशित होता था। भारतीय भाषाओं के 6 पत्र (तीन बंगला, दो फारसी, एक हिन्दी) छपते थे। 1830 में भारतीय भाषाओं के पत्रों की संख्या 16 हो गयी थी।[2]

2.5.4. **उर्दू एवं मिशनरी पत्रकारिता की दशा :** भारत में सभी देशी भाषाओं में पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन लगभग साथ-साथ प्रारम्भ हुआ क्योंकि उनके लिए समान परिवेश, प्रेरक शक्तियाँ, उद्देश्य तथा प्रशासन-तंत्र था। किन्तु जिन भाषाओं की पत्रकारिता को राजकीय संरक्षण, सहयोग और रियायतें मिली, वे प्रगति की दौड़ में सबसे आगे निकल गयी। उन्नीसवीं सदी में उर्दू-अंग्रेजी भाषा की पत्रकारिता सरकारी तथा राजाओं का प्रोत्साहन और संरक्षण पाकर फल-फूल रही थी।[3] 1837 ई० में पश्चिमोत्तर प्रदेश (उत्तर प्रदेश) की अदालतों और दफ्तरों की भाषा उर्दू हो जाने के कारण हिन्दी की शिक्षा-न्याय-आजीविका प्राप्ति में कोई व्यावहारिक उपयोगिता नहीं रह गयी थीं। परिणामस्वरूप केवल हिन्दी माध्यम से—शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्रों की संख्या भी कम होती जाती थी।[4]

---

1. डा० कृष्ण बिहारी मिश्र, हिन्दी पत्रकारिता पृ० 20-21
2. एम० चलपति राव, समाचार-पत्र पृ० 44
3. जे० नटराजन, हिस्ट्री ऑफ इण्डियन जर्नलिज्म, पृ० 2
4. 31 दिसम्बर 1853 में बनारस कॉलेज के अन्तर्गत छात्र-संख्या

हिन्दी संस्कृत के साथ अंग्रेजी	— 90	धर्मानुसार 1958
केवल हिंदी	— 0	क्रिश्चियन 3
संस्कृत के साथ हिन्दी	— 0	मुसलमान 9
उर्दू के साथ अंग्रेजी	— 93	हिन्दू 307
केवल उर्दू	— 0	
हिन्दी संस्कृत के साथ उर्दू	— 0	—भारतीय साहित्य, जौलाई, 1958

फलतः अधिकांश उच्च शिक्षित हिन्दू-मुसलमान जनता का झुकाव और लगाव उर्दू-अंग्रेजी पत्रकारिता की ओर हो गया था। प्रारम्भिक अधिकांश उर्दू पत्र हिन्दू सम्पादकों द्वारा प्रकाशित हुए थे। उदाहरणस्वरूप उर्दू-फारसी के प्रारम्भिक पत्र 'जामे जहाँनुमा' (1822 ई०) तथा 'मिरात-उल-अखबार (फारसी, 1822) के सम्पादक क्रमशः हरिहर दत्त और राजा राममोहन राय थे। उर्दू पत्र 'कोहेनूर' (1850 लाहौर) मुंशी हर सुख राय का पत्र था। 'आफताबे पंजाब' दीवान बूटा सिंह, 'अवध अखबार' मुंशी नवल किशोर, 'अखबारे आम' पं० मुंकुद राम आदि ने प्रकाशित कराये थे। ऐसी अवरोधक परिस्थितियों में हिन्दी पत्रकारिता के लिए सम्पादक-लेखक-पाठक कहाँ से आते ? अतः हिन्दी पत्रकारिता का विकास करना टेढ़ी खीर था।

1813 ई० में ईसाधर्म प्रचारकों को 'विल्वफोर्स एक्ट' के द्वारा सरकारी सरक्षण सहयोग तथा निर्विरोध प्रचार की आज्ञा मिल चुकी थी। 'यूनाइटेड मिशन ऑफ इंडिया' तथा उसकी प्रशाखाओं ने ईसा-धर्म प्रचार के लिए अभियान तेज कर दिया था। बंगला-हिन्दी में देशी भाषा के मिशनरी पत्र 'दिग्दर्शन', 'समाचार दर्पण' आदि हिन्दू धर्म-चिंतन के कटु आलोचक थे। इनका उद्देश्य ईसा-धर्म-प्रचार था। ये मिशनरी पत्र हिंदी-भाषी समाज के जातीय दृष्टिकोण, हितों, आकांक्षाओं और समस्याओं को वाणी नहीं देते थे। हिन्दी पत्रकारिता और राष्ट्रीय नवजागरण में इनका ऐतिहासिक महत्व यही माना जा सकता है कि इन्होंने हिन्दी में पाठ्य-पुस्तकों के अभाव की पूर्ति की तथा हिन्दी गद्य मे आधुनिक ज्ञानात्मक विषयों की संयोजना कर हिन्दी गद्य का व्यावहारिक रूप सामने रखा। उन्होंने भारतीय समाज की कमजोर नब्ज पर तीव्र प्रहार कर उन्हें उत्तेजित कर जगाया जिससे जन-जागरण का वातावरण निर्मित हुआ।

2.6 प्रारम्भिक हिन्दी पत्रकारिता (1820-1850 ई०)

2.6.1. **युगीन परिवेश** : उन्नीसवीं शती के प्रारम्भ से ही हिन्दी पत्रकारिता के अभ्युदय के लिए अनेक प्रेरक शक्तियाँ सक्रिय हो चुकी थीं। 'फोर्ट विलियम कॉलेज' की स्थापना (1800) तथा उसमें 'प्रेमसागर' आदि ग्रंथों के प्रकाशन और हिन्दी-शिक्षण, गद्य के प्रचलन तथा हिन्दी में धार्मिक-ज्ञानात्मक प्रचार-पाठ्य पुस्तकों के प्रकाशन ने हिन्दी-पत्रकारिता के लिए आधार शिला का निर्माण कर दिया था। अनेक शिक्षण-संस्थाओं की स्थापना, अंग्रेजी-शिक्षा के प्रसार, प्रबुद्ध भारतीयों द्वारा किये गये धार्मिक-सामाजिक सुधार आंदोलनों तथा प्रेस, अंग्रेजी पत्रकारिता आदि अनेक संचार साधनों ने पत्रकारिता के लिए आवश्यक उपादान जुटा दिये थे। ईसा-धर्म प्रचार तथा अंग्रेजी शासकों की लूट और शोषण-नीति से भारतीय सांस्कृतिक एवं आर्थिक वैशिष्ट्य का नामोनिशां मिटने लगा था। प्रतिक्रियास्वरूप लोक-मानस की विचारधारा और परिवेश में उद्वेलन और उत्क्रांति शुरू हो गयी थी। भारतीयों में आधुनिक नव-जागरण और राष्ट्रीय विरासत की रक्षा के भाव उदित हुए। उन्होंने अपने जागृत भावों और असंतोष पूर्ण विचारों को अपनी पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से वाणी दी। इन पत्र-पत्रिकाओं ने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध जनमत-निर्माण तथा राष्ट्रीय स्वाधीनता के लिए प्रबल आकांक्षा

और जागरूकता उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी।

2.6.2. **प्रथम हिन्दी पत्र** : हिन्दी में पत्रकारिता का प्रारम्भ निर्विवाद रूप से 'उदन्त मार्त्तण्ड' (30 मई, 1826 ई०) नामक पत्रिका से माना जाता है। किन्तु महादेव साहा ने अपने लेखों[1] में तथा जे० एच० आनन्द ने अपने शोध-ग्रन्थ 'पाश्चात्य विद्वानों का साहित्य'[2] में 'उदन्त मार्त्तण्ड' को पहला हिन्दी पत्र न मान कर क्रमश: मिशनरी पत्र 'दिग्दर्शन' और 'गॉस्पल मैगजीन' (1820) को माना है।

महादेव साहा के मतानुसार 'दिग्दर्शन'[3] का प्रकाशन पहले अंग्रेजी-बंगला में 1818 से 1820 ई० तक हुआ बाद में दिल्ली से आदमी बुला कर इसके तीन अंक हिन्दी में भी प्रकाशित कराये गये थे।[4]

डॉ० जॉन हेनरी आनन्द ने हिन्दी का प्रथम पत्र 'दिग्दर्शन' (1818 ई०) तथा ब्रिटिश म्यूजियम से प्राप्त 'गॉस्पल मैगजीन' (1820) को माना है। उनके अनुसार 'गॉस्पल मैगजीन' मिशनरी पत्रिका का प्रकाशन कलकत्ता में 'बंगाल औग्सलरी मिशनरी सोसाइटी' (बी० ए० एम० एस०) संस्था ने दिसम्बर 1819 में अंग्रेजी-बंगला में स्कूल प्रेस से किया था। इसके 8 से 13 (1920 ई०) अंकों के विज्ञापनों से ज्ञात होता है कि बाद में अंग्रेजी संस्करण बंद करके हिन्दी संस्करण निकाला गया। डॉ० आनन्द के पास उपलब्ध प्रति में 'गॉस्पल मैगजीन' की भाषा इस प्रकार है।[5]

'कोई समय में बंग देशीय एक पंडित ने कहा जो :

स्वाभावों याद्‌दशो यस्य न जहाति कदाचन्,

अंगार: शतधौतेन मालिनत्वं न मुञ्चति।

इसका अर्थ: जिसका जैसा स्वभाव वो उसको कभी परित्याग करता नहीं, देखो जैसे शतबार धोने से भी अंगार अपनी मालिन्यता का त्याग करता नहीं।

यह सुनके एक हिन्दुस्तानी पण्डित ने उत्तर दिया कि ऐसा नहीं, उस अंगार का भी मालिन्य दूर होय सकता है', (पृष्ठ 1-2)

हिन्दी के प्रथम पत्र होने की संभावना बूंदी से प्रकाशित पत्र 'दरबार रोज-नामचा' (1818-20) में भी मिलती है। इस पत्र का उल्लेख जेम्स टाड कृत 'एनल्स

---

1. (क) सरस्वती, जनवरी, 1960, पृ० 24
   (ख) 'राष्ट्रभारती', अगस्त, 1959
2. 'हिन्दी साहित्य के इतिहासकार—प्रथम पद के गौरव स्थान पर 'हिन्दी दिग्दर्शन' और 'गॉस्पल मैगजीन' को प्रतिष्ठित करेंगे।
   'गॉस्पल मैगजीन के आठ पृष्ठ मेरे पास सुरक्षित हैं'—डा० जे० एच० आनन्द, पाश्चात्य विद्वानों का हिन्दी साहित्य, पृष्ठ 113
3. वही, पृष्ठ 108-111
4. सं० वेद प्रताप वैदिक, हिन्दी पत्रकारिता: विविध आयाम, पृ० 779
5. (क) डॉ० जे० एच० आनन्द, पाश्चात्य विद्वानों का हिंदी साहित्य, पृ० 112-13
   (ख) आजकल, दिसम्बर, 1984, पृ० 49

एंड एंटीक्वीटीज आॅफ राजस्थान (भाग 2) में किया गया है।[1]

किन्तु जेम्स टाड ने इस पत्र की भाषा और प्रकाशन काल की कोई प्रामाणिक चर्चा नहीं की है। 'दिग्दर्शन' (1818) की कोई हिन्दी प्रति उपलब्ध नहीं हो पायी है।

अत: उपलब्ध प्रामाणिक सामग्री और खोज के आधार पर मिशनरी पत्र 'गाॅस्पल मैगजीन' (1820 ई०) को पहला हिन्दी पत्र मानना अधिक तर्कसंगत होगा।

2.4.3. **प्रारम्भिक हिन्दी पत्र-पत्रिकाएँ** : हिन्दी पत्रकारिता के प्रारम्भिक वर्षों में (1826-50 ई०) निम्नलिखित पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हुई थी।[1]

सन्	पत्र का नाम	संपादक-प्रकाशक	स्थान	भाषा
30 मई, 1826	उदन्तमार्त्तण्ड	पं० युगुल किशोर सुकुल	कलकत्ता	हिन्दी
10 मई, 1829	बंगदूत	प्र० राजा राममोहन राय आदि सं० नीलरतन हालदार	कलकत्ता	हिन्दी बंगला, फारसी
जून 1834	प्रजामित्र	प्रकाशन संदिग्ध माना गया है		—
जून 1845	बनारस अखबार	प्र० राजा शिव प्रसाद सं० गोविंदनाथ थत्ते	बनारस	हिन्दी
11 जून 1846	मार्त्तण्ड	प्र० नासिरउद्दीन	कलकत्ता	हिन्दी-उर्दू फारसी बंगला
1846	ज्ञानदीप	प्र० अर्ल।	—	—
1848	शिमला अखबार	शेख अब्दुल्ला	शिमला	हिन्दी-उर्दू
1848	मालवा अखबार	इन्दौर दरबार	इन्दौर	हिन्दी-मराठी
1849	जगद्दीपक भास्कर	—	कलकत्ता	बंगला-हिन्दी
1850	साम्यदण्ड मार्तण्ड	पं० भुगुलकिशोर सुकुल	कलकत्ता	हिन्दी
"	सुधाकर	सं० तारा मोहन मित्र	काशी	हिन्दी-बंगला
"	मजहरुल सरूर	भरतपुर दरबार का मुख पत्र	भरतपुर	हिन्दी-उर्दू

1. सं० वेद प्रताप वैदिक, पूर्व उद्धृत पृ० 179

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि 1826-1850 ई० के बीच केवल लगभग ग्यारह-बारह पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हुई थीं जिनमें अधिकतर दो या तीन भाषाओं में निकली थीं। इससे हिन्दी पत्रकारिता की धीमी गति का आभास हो जाता है। तत्कालीन हिन्दी पत्रकार-संपादकों की अदम्य जिजीविषा का परिचय इसी बात से लग जाता है कि पं० युगुल किशोर सुकुल को 'उदन्त मार्त्तण्ड' धनाभाव के कारण (1827) में बन्द करना पड़ा था किन्तु पुनः उसी निष्ठा और उत्साह से 'साम्य दण्ड मार्त्तण्ड' (1850 ई०) का प्रकाशन किया था। अधिकतर बंगला, हिन्दी, उर्दू तथा अंग्रेजी की पत्रिकाएँ कलकत्ते से प्रकाशित होने के कारण सम्भवतः यही थे कि प्रारम्भ में देवनागरी आदि लिपियों के टाइप कलकत्ते में ही उपलब्ध थे तथा इसी प्रदेश में सबसे पहले आधुनिक शिक्षा और नवजागरण का स्पंदन हुआ था। प्रारम्भिक बंगला-अंग्रेजी पत्र भी यहीं से प्रकाशित हुए थे।

प्रारम्भिक पत्रों 'उदन्त मार्त्तण्ड', 'बंगदूत' 'मालवा अखबार' आदि के विषय में (उपर्युक्त तालिका से अधिक) विवरण उपलब्ध हैं जिनके आधार पर प्रारम्भिक पत्र-कारिता के स्वरूप, भाषा, नीति, उद्देश्य के बारे में कोई धारणा बनाई जा सकती है।

'उदन्त मार्त्तण्ड' (साप्ताहिक पत्रिका)—30 मई 1826 को अहिन्दी भाषी क्षेत्र कलकत्ता से हिन्दी-भाषी जनता के हितों का प्रतिनिधित्व करने से लिए निकाली गई थी।[1] इसके संपादन-संचालक युगुल किशोर सुकुल सरकारी सहायता[2], डाक दर की रियायतों के न मिलने तथा धनाभाव के कारण इसे डेढ़ वर्ष बाद (11 दिसम्बर 1827 ई०) बन्द करने को मजबूर हो गए। उस समय थोड़े से ग्राहकों के बल पर किसी भी भाषा के पत्र को चलाना पत्रकारों के लिए असम्भव था।[3]

इस साप्ताहिक पत्रिका का मासिक मूल्य 2 रु० और अंक दर आठ आना थी जो तत्कालीन मूल्यमानों को देखते हुए बहुत अधिक प्रतीत होती है। क्योंकि तत्कालीन सोने का भाव इसी पत्रिका के तीसरे अंक में इस प्रकार प्रकाशित हुआ था[4]—

सोना दर भरी	16 ।।।)	सोना टकसाल सही भरी 15 ।।।)
मोहर नई दर	17)	17 ।।)
पुरानी	18)	18)

1. देखिए, उदन्त मार्त्तण्ड : मुख पृष्ठ 1
2. (क) "पै हमें पूछिऐ तो इनकी मायावी दया से सरकार अंग्रेज कंपनी महाप्रतापी की कृपा जैसे औरों पर पड़ी वैसे पड़ जाने की बड़ी आशा थी और मैंने इस विषय पर यथोचित उपाय किया—अंत में नटों के से आम दिखायी दिए"—सं० युगुल किशोर सुकुल, उदन्त मार्त्तण्ड, 4 दिसम्बर, 1827

   (ख) ("उस समय ब्रिटिश कंपनी 'समाचार दर्पण', उर्दू-फारसी पत्र 'जामे-ए-जहाँनामा' को डाक दर की रियायतें देती थी किन्तु उदन्त मार्त्तण्ड को ये रियायतें माँगने पर नहीं दी गई।")—एम० चलपति राव, पूर्व उद्धृत, पृ० 39
3. उदन्त मार्त्तण्ड, 12 जून, 1827 ई०
4. अंबिका प्रसाद वाजपेयी, पूर्व उद्धृत, पृ० 95.

वस्तुत: इस काल की पत्रिकाओं का अधिक मूल्य मुद्रण-व्यय के अधिक होने तथा सरकारी संरक्षण के अभाव के कारण होता था। किन्तु व्यापारी वर्ग तो इसे अधिक मूल्य पर भी खरीदने को तैयार रहता था[1] क्योंकि स्वदेशी व्यापारी बांधवों के हितों के लिए यह पत्रिका संघर्षशील एवं सचेत रहती थी। बंगला पत्रिका 'समाचार चन्द्रिका' ने भारतीय व्यापारियों के विरुद्ध एक चिट्ठी प्रकाशित करके उन्हें बहुत बुरा-भला कहा था जिसका तीखा प्रत्युत्तर संपादक युगुल किशोर सुकुल के देने पर 'समाचार चन्द्रिका' के संपादक भवानी चरण बनर्जी ने उन पर मान-हानि का दावा ठोक दिया था।[2]

इस पत्रिका में हिन्दी भाषा के प्रति सजगता और दायित्व भावना भी परिलक्षित होती है। मिशनरी पत्र 'समाचार दर्पण' के द्वारा 'खड्गक सिंह' गलत नाम लिखने पर 'उदन्त मार्त्तण्ड' ने उसके साथ तीव्र कटाक्ष कर लम्बा वाद-विवाद चलाया था[3] जो शक्ति-साधन विहीन होने पर भी इस पत्र की युगीन चेतना और हिन्दी के प्रति अनुराग को द्योतित करता है।

'उदन्त मार्त्तण्ड' की भाषा बोल-चाल की, व्यंग्यपूर्ण तथा स्पष्ट है। 'उदन्त मार्त्तण्ड' हिन्दी का पहला समाचार पत्र होने पर भी भाषा और विचारों की दृष्टि से सुसंपादित पत्र था।[4] इसमें विज्ञापन, समाचार, बाजार भाव, पत्र आदि विविध सामग्री प्रकाशित होती थी।

नीलरतन हालदार के संपादन में **'बंगदूत'** का प्रकाशन 10 मई, 1829 ई० में अहिन्दी भाषी क्षेत्र कलकत्ता से ही तीन भाषाओं बंगला, फारसी, हिन्दी में एक साथ हुआ

---

1. 'उदन्त मार्त्तण्ड' में प्रकाशित व्यापारी वर्ग की चिट्ठी, जेठ बदि 13 संवत् 1883
2. डा० कृष्ण बिहारी मिश्र, हिन्दी पत्रकारिता, पृ० 44
3. (क) (एडिटोरियल रिमार्क—अशुद्धता—"समाचार-दर्पण में नए समाचार न मिले इसका कुछ दु:ख नहीं है पर लाहोर में रनजीत के समाचार में गोरक्ष सिंह जो लिखा जाता है—तो मूल, इसका खड्ग सिंह और ए महाराजा के बड़े कुमार हैं इतनी विनय और है कि अंग्रेजी गवर्नमेंट गॅजेट में भी शोध देवें —और दर्पण प्रदर्शक ने एक बेर खड्सिंह और दूसरी बेर खड्गक सिंह, फिर खड्क सिंह अपने दर्पण में लिख दिया है। इसमें कौन से शब्द में उनकी अभिरुचि है, समझ में नहीं आया।") —उदन्त मार्त्तण्ड, आश्विन बदि अंक, संवत् 1883

   (ख) 'खड्ग सिंह रियासत मुरसान के तीसरे राजकुमार थे जो बाद में राजा महेन्द्र प्रतापसिंह के नाम से प्रसिद्ध हुए'—मन्मथनाथ गुप्त, क्रान्तिकारी आन्दोलन का वैचारिक इतिहास, पृ० 79
4. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ० 389

19 वीं शती के मध्य का प्रमुख साप्ताहिक

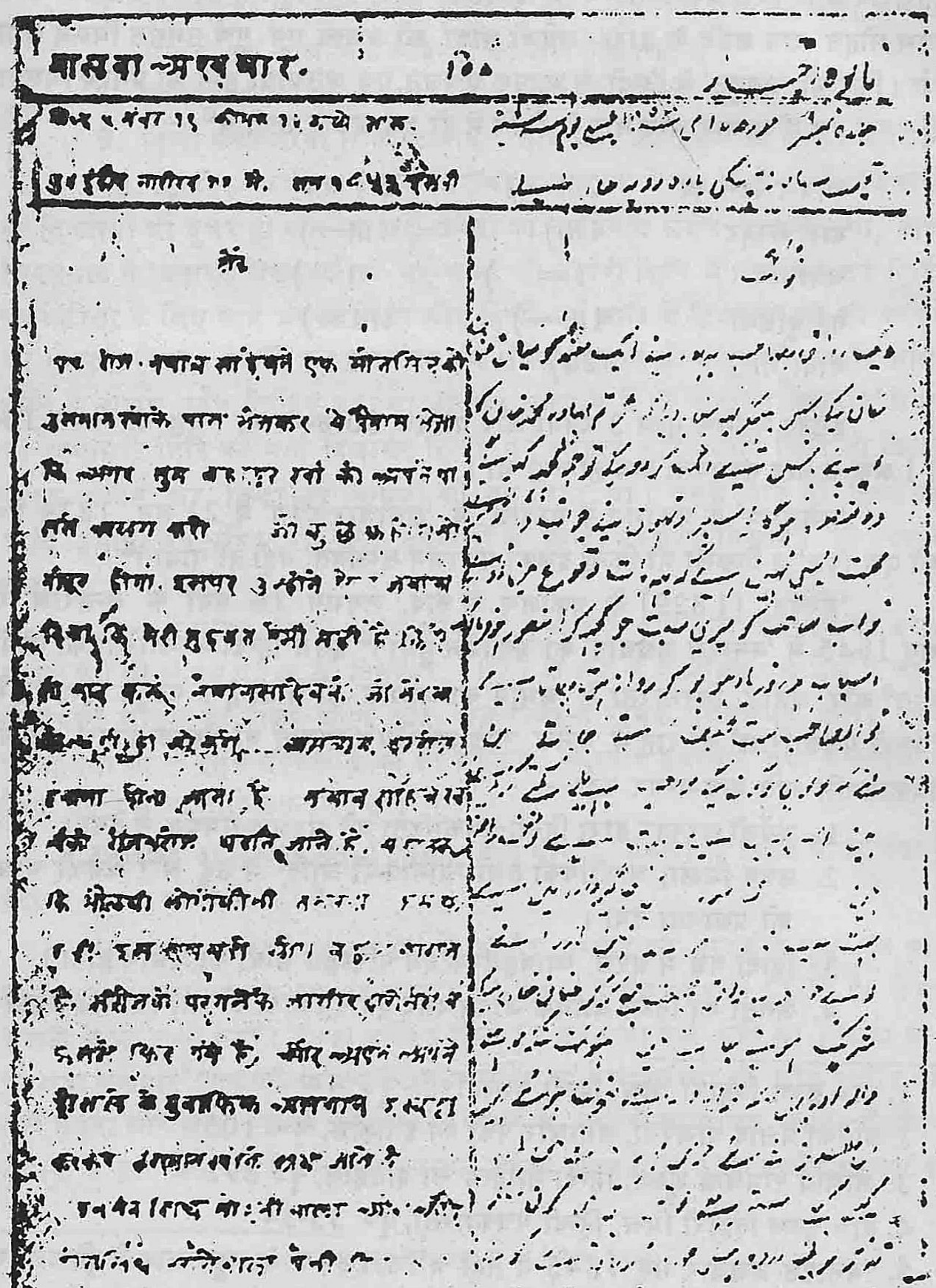

मालवा-अखबार.

था। इसका अंग्रेजी संस्करण 'हिन्दू हेरल्ड' अलग से सोलह पृष्ठों में छपता था।[1] राजा राममोहन राय और उनके सहयोगियों आर०एम० मार्टिन द्वारका नाथ ठाकुर, नीलरतन हालदार आदि द्वारा प्रकाशित पत्र में हिन्दी का होना महत्त्वपूर्ण है क्योंकि तब तक राजा राम मोहन राय आदि के द्वारा अंग्रेजी भाषा को प्रभुत्व एवं पूर्ण समर्थन मिलने लगा था। फिर भी 'बंगदूत' से हिन्दी के व्यापक प्रचलन एवं जनभाषा होने का प्रमाण मिलता है। इस पत्र में बाजार भाव नागरी लिपि में ही इस प्रकार छपते थे[2]—

चावल पटने का	2।।।—)	3) मन
दाल अरहर	1।।।)	1।।।—)
चना	1=)	1=)
गेहूँ दूधिया	1।।।—)	1।।।=)
गोवा घी	24)	25)

इसका मासिक मूल्य 3 रुपया और वार्षिक 30 रुपया था। यह भी केवल 10-11 अंक के बाद सम्भवतः बन्द हो गया था।

'प्रजामित्र' के प्रकाशन के सम्बन्ध में 'समाचार दर्पण' में 21 जून, 1834 ई० को एक विज्ञप्ति निकली थी किन्तु इसका प्रकाशन सम्भवतः नहीं हो पाया।[4]

'बंगदूत' (1829) के प्रकाशन के बाद, लगभग 16 वर्षों के अन्तराल से सन् 1845 में 'बनारस अखबार' का प्रकाशन हुआ।[5] इससे हिन्दी पत्रकारिता की धीमी गति[6] और अबाध निरन्तरता के अभाव का आभास हो जाता है। वस्तुतः उस युग में 'हिन्दी पत्रकारिता' की राह में अनेक **'गति अवरोधक बाधाएं** थीं जिनके कारण उसकी विकासगति अति मन्द-मन्थर रही—

1. अंग्रेजी सरकार द्वारा हिन्दी-पत्रकारिता को संरक्षण-समर्थन न देना।
2. उच्च शिक्षा, आजीविका तथा न्यायालयों आदि में उर्दू और अंग्रेजी भाषा को प्रधानता देना।
3. हिन्दी गद्य में सरल, व्यावहारिक एवं परिष्कृत भाषा का अभाव होना।
4. जनता का निम्न आर्थिक जीवन-स्तर एवं पत्रकारों की आर्थिक कठिनाइयाँ।

---

1. डा० कृष्ण बिहारी मिश्र, हिन्दी पत्रकारिता, पृ० 44
2. अंबिका प्रसाद वाजपेयी, समाचार पत्रों का इतिहास, पृ० 105
3. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ० 391
4. डा० कृष्ण बिहारी मिश्र, हिन्दी पत्रकारिता, पृ० 33-34
5. "बनारस अखबार सन् 1845 में नहीं बल्कि 1844 के जून मास में निकला था और इसके संपादक मराठा नहीं बल्कि एक बंगाली सज्जन तारा मोहन मित्र हैं।" ब्रजेन्द्र नाथ वंद्योपाध्याय, विशाल भारत, मार्च, 1931
6. नटराजन एम०ए० हिस्ट्री आफ दि प्रेस इन इंडिया, पृ० 104

5. हिन्दी प्रदेश में साक्षरों की अल्प-संख्या तथा हिन्दी-पाठकों की नगण्यता।
6. पत्र-पत्रिकाओं के प्रति जनरुचि, जन-समर्थन की न्यूनता।
7. पत्रकारिता के विकास की अनिवार्य शर्त—दूरगामी संचार-साधनों, संवाद-साधनों एवं औद्योगिक व्यवस्था का अविकसित होना।
8. पत्रकार-कला विषयक अज्ञान और पत्रकारों की अल्प-संख्या।
9. हिन्दी पत्रकारिता में व्यावसायिक लाभ और प्रोत्साहन का अभाव आदि।

अतः हिन्दी-पत्रकारिता के इस विरोधी वातावरण में जब छोटी-मोटी पत्रिकाओं का निकलना भी दूभर हो गया था, उर्दू-अंग्रेजी का आधिपत्य सर्वत्र विद्यमान था, राजा शिवप्रसाद ने 'बनारस अखबार' की उर्दू-भाषा को नागरी लिपि में प्रकाशित कर हिन्दी-पत्रकारिता के लिए मार्ग प्रशस्त किया और हिन्दी-उर्दू आदि के द्विभाषी पत्रों की परंपरा का सूत्रपात किया। यद्यपि उस समय यह पत्र अंग्रेज सरकार की चाटुकारिता और भाषा-नीति के कारण सर्वत्र निन्दित हुआ था, तथापि अनजाने में ही 'बनारस अखबार' ने उर्दू को देवनागरी लिपि का मार्ग दिखाकर हिन्दी पत्रकारिता और जातीय लिपि को विस्तृत फलक प्रदान कर हिन्दी-उर्दू बन्धनों को दृढ़ किया था। इसके बाद ही हिन्दी-उर्दू आदि द्विभाषी पत्र-पत्रिकाओं और उर्दू-पत्रों के हिन्दी-संस्करण निकालने की परम्परा चली।

लीथो में मुद्रित, हिन्दी प्रदेश काशी से प्रकाशित होने वाले इस पत्र की प्रसार संख्या 90 थी।[1] इस पत्र के 20 दिसम्बर, 1877 के अंक में प्रकाशित एक लेख में भारत में अंग्रेजी शासन का राजा जनक और राम-राज्य से रोचक तुलनात्मक अन्तर स्पष्ट किया गया था।[2] इसमें संस्कृत ग्रन्थों का अनुवाद, स्थानीय समाचार तथा अन्य पत्रों से लिये गए उद्धरण आदि प्रकाशित होते थे।

'मार्त्तण्ड' (इण्डियन सन् 1846) 'ज्ञान दीप' (1846) के विषय में तालिका से अधिक सूचना उपलब्ध नहीं है।

'मालवा अखबार' मध्य प्रदेश में इन्दौर दरबार का राजकीय मुख्य पत्र था। हिन्दी-उर्दू में प्रकाशित इस पत्र का आकार 11 इंच × 8 इंच का था। 1873 ई० से यह मराठी में भी छपने लगा। इसका वार्षिक मूल्य 12 रु० तथा एक प्रति का 1 आना था। 'मालवा अखबार' तत्कालीन राजनैतिक परिवेश या सत्ताधारियों की कोई तस्वीर पेश नहीं करता और न ही उसमें किसी भी प्रकार के सुधारों-सामाजिक अथवा शैक्षणिक सुधारों के प्रति आवेग है। वस्तुतः वह उसका उद्देश्य भी नहीं था। वह इन्दौर दरबार की

---

1. उद्धृत बंजरत्नदास, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, पृ० 189-190
   (क) एम० चलपति राव, समाचार पत्र, पृ० 109
   (ख) रिपोर्ट आन नेटिव न्यूज पेपर्स एन०डब्ल्यू०पी० 1877 में प्रसार संख्या 58 बताई गई है
2. रिपोर्ट आन नेटिव न्यूज पेपर्स एन० डब्ल्यू० पी०, 29 दिसम्बर 1877, पृ० 2

आकांक्षाओं और आवश्यकताओं का प्रतिबिम्ब था।"[1] किन्तु उसमें 19वीं शती के सातवें दशक से नवजागरण के साथ राष्ट्रीय समस्याओं तथा राजनीतिक विषयों से सम्बन्धित लेख प्रकाशित होने लगे थे।[2] फरवरी 1853 ई० के अंक में प्रकाशित 'नागपुर के समाचार' इस प्रकार थे—

"वहाँ के अखबार से मालूम हुआ कि रजीडण्ट साहिब बहादुर के लिए बमूजिब भूसे का महसूल माफ हुआ। एक दिन दो सिपाहियों ने मियाँ भाई को बहुत मारा। देखिए बचता है कि नहीं। सिपाहियों को गिरफ्तारी का हुकुम हुआ है। कई परगनों में से कई हजार रुपया खजाने में दाखिल हुआ। खबर आई कि एक औरत ने पेट गिरा दिया।"[3]

इसमें एक क्षेत्र के समस्त समाचार बिना किसी शीर्षक तथा बिना किसी तिथि-तारतम्य के एक साथ संयुक्त कर लिख दिए गए है जो आधुनिक समाचार के प्रस्तुतिकरण से भिन्न शैली है।

'शिमला अखबार' लिथोग्राफ में मुद्रित, साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन शेख अब्दुल्ला ने किया तथा पहाड़ी प्रदेश की सामाजिक समस्याओं को विषय बनाया। इस रोचक, विविध विषयों से समन्वित पत्र की कुल पचास प्रतियों में से 22 हिन्दू, 8 अंग्रेज और 20 प्रतियाँ निःशुल्क बाँटी जाती थी।[4] यह मनोरंजक लेखों वाला आकर्षक साज-सज्जा युक्त सुसंपादित पत्र था। **'सुधाकर'** (1850) तारा मोहन मित्र द्वारा संपादित मनोरंजक, ज्ञानवर्द्धक विशुद्ध हिन्दी पत्र था। इसकी प्रसार संख्या 74 थी। प्रकाशन-व्यय 50 रु० तथा आय 74 रु० थी[5] लेख परिमार्जित शुद्ध हिन्दी में प्रकाशित होते थे[6] तथा पत्र के नाम के नीचे काशी के चित्र अंकित रहते थे।

निष्कर्ष

प्रारम्भिक पत्र-पत्रिकाओं की संघर्ष-यात्रा कछुए की चाल से रुकती-बढ़ती चली थी। अधिकांश पत्रों का जीवन बुलबुले की भाँति क्षणभंगुर रहा था। उस समय तक न इनको खरीदकर पढ़ने वाले थे और न इनका पोषण-परिवर्द्धन करने वाले प्रोत्साहीत शासक थे, फिर ये चलते तो किसके बल पर ? यही कारण था कि इस लम्बी अवधि में केवल 10-12 पत्रिकाएँ ही प्रकाशित हो सकीं।

शैशव काल की पत्रकारिता कोई ठोस स्मरणीय विशिष्ट उपलब्धि प्राप्त करने में समर्थ नहीं हो सकी थी। उसमें निश्चित नीति, स्वरूप, दृढ़ उद्देश्यों एवं सिद्धान्तों के अभाव

1. डा० कैलाश नारद, मध्य प्रदेश में हिन्दी पत्रकारिता : एक शताब्दी, पृ० 11
2. रिपोर्ट आन नेटिव न्यूज पेपर्स : एन०डब्ल्यू०पी०, जौलाई-दिसम्बर 1878 (27 अप्रैल, 1970, पृ० 191-20
3. डा० कैलाश नारद, मध्य प्रदेश में हिन्दी पत्रकारिता, पृ० 12
4. 1850 की प्रेस सम्बन्धी सरकारी रिपोर्ट
5. सं० वेद प्रताप वैदिक, हिन्दी पत्रकारिता : विविध आयाम, पृ० 118
6. नागरी प्रचारिणी पत्रिका, सं 2007, भारतेन्दु जन्म शती अंक, प० 60

हिंदी का सर्वप्रथम दैनिक पत्र

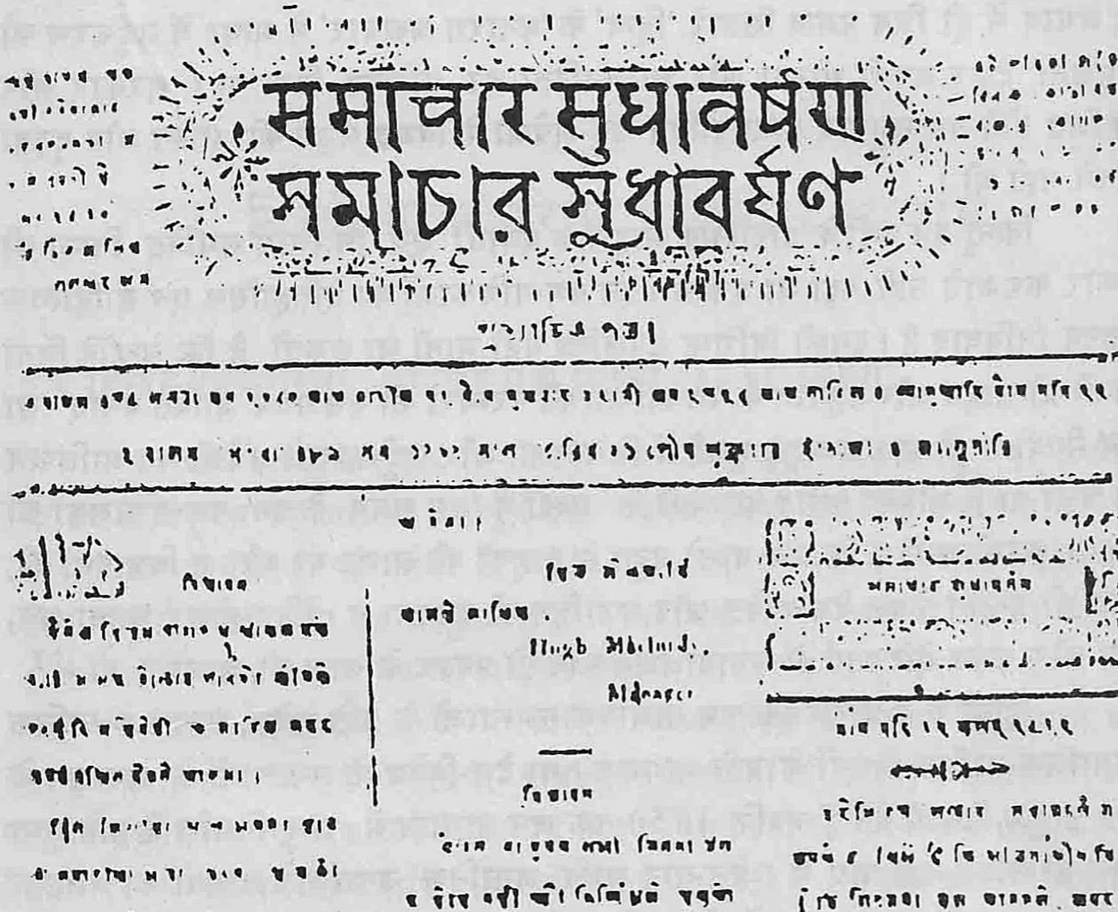
समाचार सुधावर्षण
সমাচার সুধাবর্ষণ

के कारण विरोधी ताकतों से जूझने की संकल्प शक्ति विकसित नहीं हो पाई थी। इस प्रारम्भिक अवस्था में यह संभव भी नहीं था। शायद किसी दृढ़ नीति और संकल्प शक्ति के अभाव में ही शिव प्रसाद सितारे 'हिन्द' के 'बनारस अखबार' ने भाषा में उर्दूकरण को प्रमुखता देकर अपनी भीरुता और चाटुकारिता का परिचय दिया था। सरकार और शिक्षित होते जन-समुदाय द्वारा पोषित उर्दू-अंग्रेजी के विरुद्ध लड़ने की शक्ति और दृढ़ता उनमें नहीं थी।

किन्तु इन पत्रों के प्रारम्भिक साहसिक प्रयासों एवं निःस्वार्थ समर्पित निष्ठा को नकार कर आगे नहीं बढ़ा जा सकता। इन पत्र-पत्रिकाओं का ऐतिहासिक एवं साहित्यिक महत्त्व निर्विवाद है। इनकी विशिष्ट उपलब्धि यही मानी जा सकती है कि उन्होंने बिना किसी प्रोत्साहन और सहयोग के पत्रकारिता की परम्परा को उस समय जीवित बनाए रखा जब हिन्दी-भाषी समाज अटूट मूर्छा में निमग्न था और उर्दू-फारसी-अंग्रेजी का आधिपत्य हो चला था। अंबिका प्रसाद वाजपेयी के शब्दों में 'उस समय के इन पत्र-संचालकों की प्रशंसा करनी चाहिए कि जब न तो बहुत से ग्राहकों की आशा थी और न विज्ञापनों की, फिर भी इन्होंने केवल देश-भक्ति और प्रजाहित की कामना से प्रेरित होकर अपना धन, श्रम और समय ऐसे कार्य में लगाया जिससे किसी प्रकार के लाभ की आशा न थी।"[1]

हिन्दी के ये प्रारम्भिक पत्र सामयिक समस्याओं के प्रति सचेत, समाज के धार्मिक सामाजिक-आर्थिक विषयों के प्रति जागरूक तथा देश-विदेश के समाचारों के प्रकाशन के प्रति उत्सुक दिखाई देते हैं जबकि 1850 तक जन सामान्य में राष्ट्र-निर्माण के प्रति सुप्त भाव भी उदित नहीं पाए थे। रेल-तार आदि आधुनिक जनसंचार साधनों का आगमन भी तब तक नहीं हुआ था। पत्रों की नीति प्रतिरक्षात्मक और ढुलमुल थी। हिन्दी पत्रकारिता को प्रारम्भ से ही अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए कठोर संघर्ष करना पड़ा था। फलस्वरूप इनके विकास की गति अति मन्द रही।

पत्रों की भाषा, रूप, नीति आदि के सम्बन्ध में कोई सामान्य आदर्श निर्मित नहीं हो पाया था। हिन्दी पत्रों में व्यावहारिक बोलचाल या विद्वानों द्वारा प्रयुक्त भाषा (बनारस अखबार आदि को छोड़कर) लिखी जाती थी।

---

1. अंबिका प्रसाद वाजपेयी, पूर्व उद्धृत, पृ० 121